वर्ष 29 | फाल्गुन-चैत्र | मार्च-2024 | अंक 03 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2024-2026
मूल्य 10/- रुपये
मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

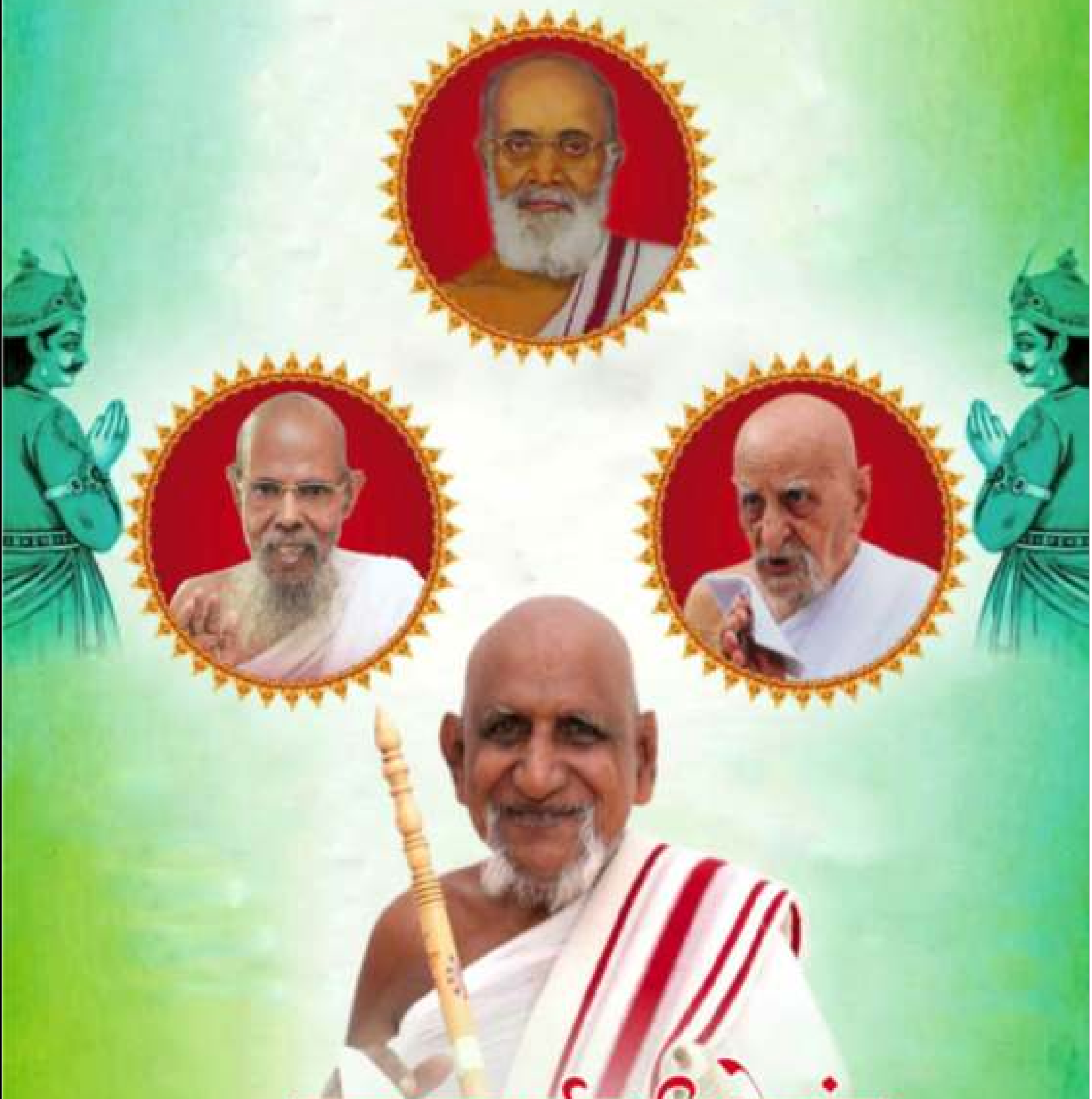

गुरु समर्पण विशेषांक

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

✲ राग से सम्बन्ध है आत्मा का, अनादि-अनन्तकाल का, अनन्तकाल से रहे हुए सम्बन्ध को शीघ्रता से विच्छेद करना आशक्य हो सकता है। अतः धैर्यपूर्वक राग का सर्वप्रथम स्थान बदलना है। भौतिक पदार्थों पर रही हुई राग की आसक्ति हटाकर अनंत उपकारी महापुरुषों पर लगाना, उसे प्रेमपूर्वक मिलना, उनकी हर आज्ञा का प्रीति/स्नेहपूर्वक आदर सहित पालन करना, उनके चरणों में सर्वस्य समर्पण करना। भौतिक पदार्थों पर से प्रीति तोड़कर, विशेष प्रीति उन महापुरुषों पर लाना। वे महापुरुष है विश्व के सर्वश्रेष्ठ अनन्त उपकारी पंच परमेष्ठी भगवंत।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

थावरं जंगमं चेव, धणं धण्णं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं, णालं दुक्खाउ मोयणे॥

धन, धान्य और घर-सामान, स्थावर तथा जंगम कोई भी सम्पत्ति प्राणी को कर्मजन्य दुःखों से मुक्त करने में समर्थ नहीं है। **- उत्तरा. सूत्र, 6.6**

पाथेय *हे नाथ, हम पूर्ण चेतना प्राप्त करने के लिए करते है। अभीप्सा। मेरी पूरी सत्ता एकाग्र होकर संग्रहित हो रही है, विभिन्न प्रकार के सुसंगठित हो रही है, विभिन्न प्रकार के सुसंगठित फूलों के गुलदस्तें में संकल्प शक्ति ही वे हाथ और सूत है जो इन फूलों को करके एकत्रित कर उन्हें अभ्रान्त हुए बिना एक गुलदस्ते के रुप में तुम्हें आदर सहित कर रही हैं भेंट। हे नाथ, तुम्हारी शक्ति मेरे अन्दर एक अडिग चट्टान की तरह है और मेरी सत्ता तुम्हारी उपस्थिति के उल्लास से तुम्हें समर्पित है उसने किंचित भी नहीं बचाया है कोई अंश भाग, जो नहीं हुआ है तुम्हें निवेदित हे निश्चल, प्रशान्त चैतन्य ! सद्वस्तु तुम एक सनातन रहस्यमय हो और विश्व की सीमाओं, के सजग प्रहरी हो किन्तु कुछ योग्य व्यक्तियों पर तुम उद्घाटित कर देते हो अपने रहस्य और फिर तुम्हारी अपनी परम इच्छा शक्ति बन जाते हैं जो बिना पक्षपात के चुनाव करती है और निस्काम होकर सम्पन्न करती हैं तुम्हारा कार्य।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-29 फाल्गुन-चैत्र मार्च 2024 अंक-3

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- एक सद्गुरु..... जिसने मुझे जीवन दिया -(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5

4- श्री अन्तरिक्षजी तीर्थ का इतिहास, आनेवाले चोवीसी में होने वाले तीर्थंकर.... 6-7

5- क्या मूंग जल गये थे ?, संयम जीवन पाना है.... मुनिश्री राजसुंदरविजयजी म.सा. 8

6- 14 राजलोक में श्री सीमंधर स्वामी भगवान कहां विचर रहे है ?, 18 पाप स्थान 9

7- गुरुदेव आनंद सागर, एक नक्षत्र में 5 कल्याणक किस परमात्माजी के हुए..... 10

8- घोर अंधकार में गुरु मंत्र बने उजाला-डॉ. सुभाष जैन 11

9- मार्मिक कहानी- नाम का आश्रय, गुरु के शरीर के हर एक अंग मेरा जीवन कल्याण ! जैन धर्म से अनुराग 12

10-श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ महिमा.....जीवन एक क्रिकेट है, कुछ ऐसी दवायें भी होती है, जिनके उपयोग से बीमारियां नहीं होती..... 13-14

11-महाविद्रेह क्षेत्र.... ऊपरी जानकारी....! 15

12-फागण की फेरी क्यों ? 16

13-सुनते है दया गुरु की रोज बरसती है, एक बून्द जो मिल जाये, तकदीर बदलती है-डॉ. सुभाष जैन 17

14-सही मार्ग पर ले जाना वाला मार्गदर्शक- पंन्यास प्रद्युम्न विजय गणि म. 18

15-नवरत्न का नाम आवेगा, पूजा संबंधी उपयोग..... 19

16-गाँठ बांध लें...! 20

17-लोगस्स का कल्प (मंत्र) 21

18-गुरु महाराज की तैतीस आशातनाएं ? 22

19-जीव दया फण्ड (विज्ञापन) 23

20-वर्गपहेली- 346 - जयंतीलाल जैन,रतलाम 24

21- ज्ञान गंगोत्री- 346-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा. 25

22- शासन-समाचार 26-41

23- हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है,जैनत्व का गौरव- श्री हेमचन्द्राचार्यजी 42

संपादकीय

एक सद्गुरू....जिसने मुझे जीवन दिया

अनन्त- अनन्त काल बीत जाने इस धरती पर सद्गुरु होता है। सिद्ध तो बहुत है पर सिद्ध पुरुष बहुत थोड़े होते हैं। सिद्ध वह होते है जिन्होंने सत्य को जाना है, सत्य को पाया है और सिद्ध पुरुष (सद्गुरु) वे होते हैं जिन्होंने सत्य को जाना ही नहीं दूसरों को दिखाया भी है। परम वीतरागी सिद्ध भगवान लीन है अपने में, पर मनुष्य की भटकती हुई भीड़ को अज्ञान से, अंधे विश्वास से और अंधकार से तारते हैं।

एक सद्गुरु अनन्तों के लिये द्वार बन जाता है जिसने एक सद्गुरु को जाना उसने अतीत, वर्तमान वे भविष्य के सभी सद् गुरुओं को जान लिया। आदमी के नैतिक, बौद्धिक, धार्मिक व सांस्कृतिक क्षरण के शिकार एवं अंधकार में डूबे हुए भरत को एक ऐसे दिव्य प्रकाशपुंज की आवश्यकता थी जो इक्कीसवीं सदी में मानवता को सन्मार्ग दिखाकर उत्थान की ओर ले जा सके। भौतिकता की झूठी चकाचौंध को धूल-धसरा करा अध्यात्म की यथार्थ रोशनी से विश्व को नहला सके।

परम पूज्य मालव भूषण गुरुदेव आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी महाराजा प्राणियों में आनन्द भर देने वाले व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन को सर्वांग सुन्दर बनाने में सक्रिय योगदान करने वाले आध्यात्मिक महापुरुष थे । वे आत्मिक उत्थान में प्रेरक निमित्त रहे हैं। शान्त मौन मुद्रा में अपनी वाणी के माधुर्य से या फिर भीतर प्रगटे अध्यात्मिक बल से या चारित्र के आभा मण्डल की ज्योतिर्मय किरणों द्वारा अनायास ही सन्तृप्त प्राणियों पर शांति एवं आनन्द की फुहारों की वर्षा करके इनको आनंदित कर देने में सक्षम थे। स्वयं हर दशा में समतावान रहकर प्रतिकूल दशाओं में भी सदा मुस्कुराते रहने की प्रेरणा देने वाले संत रहे है। आचार्यश्री उन लौकिक विधि-विधानों का सदा आदर करते थे जो उनकी पवित्र श्रद्धा व व्रताचरण में बाधा नहीं डालते थे। सम्माननीय होकर भी जिन्हें मान नहीं था, गौरवशाली होकर भी जो गर्व नहीं करते थे, ज्ञान के सागर होकर भी ज्ञानी होने का दम्भ नहीं रखते थे, प्रत्येक प्रतिकूलताओं में जिन शासन हित के लिये, उनके उद्धार के लिये सतत् चिंतनशील रहना आपका स्वभाव था।

आचार्यश्री ने समाज में प्रेम, आदर, स्नेह व सम्मान की मांग कर या खरीददार नहीं पाया था। उन्होंने कठिन साधना, कठिन पुरुषार्थ व अपने जीवन की सरलता, सहलता के बल पर सब कुछ पाया था। आचार्यश्री के अनन्त उपकार है हम पर। मैंने उन्हें बहुत निकट से देखा है, जाना है, परखा है। बहरिंग ही नहीं अन्तरंग तक उन्हें टटोला है। एक ओर वे अन्तर्मुखी होकर मोक्ष मार्ग पर आरुढ़ हैं तो दूसरी ओर संवेदनशील, भावुक व करुणावान स्वभाव के कारण व्यक्ति और समाज की पीड़ा से व्यथित होकर जनहित की भावना के उ-ेश्य से बहिर्मुखी हो जाते थे। मुनिचर्या व 36 मूल गुणों का -ढ़ता से पालन करने के साथ-साथ प्रवचन, धर्म प्रभावना के लिये भी समय निकला लेना यह आप जैसे ही सन्त के वश की बात थी। पाषाण हृदय के व्यक्तियों में भी आस्थाओं के स्त्रोत निकाल देने में आप सक्षम थे व्यक्ति व समाज के जीवन की धार्मिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, राजनैतिक ज्वलन्त समस्याओं के प्रति जागरुक ही नहीं, विभिन्न कारणों को जानकर यथार्थ समाधान के लिये कर्मठ रुप से सक्रिय रहते थे। सृजनात्मक चिंतन द्वारा स्व-केन्द्रित है फिर भी मानव उत्थान की सद्भावना से भरा हृदय है। आप सारे जग को मानवता का दिग्दर्शन कराकर परमार्थ की ओर अग्रसर करने की अभिलाषी थे। विचारक थे दार्शनिक थे। अंधविश्वासी रुढ़िवादी संकीर्ण साम्प्रदायिक भावनाओं से बहुत दूर थे। मैं तो मानता हूं कि महावीर के सच्चे अनुयायी थे। महावीर की स्याद्वाद्व शैली व अनेकांत के अवतार थे। आपका सकारात्मक सृजनात्मक चिंतन चुम्बकीय आकर्षण से भरा था जो जन-मानस को वैचारिक प्रदूषण से मुक्ति दिलाकर सफल जीवन निर्माण की आशावादी -ष्टि प्रदान करता था

आपके निकट आते ही मानसिक दुष्चिंताएं, कुण्ठाएं, अहंकार आदि विकार अपना दम तोड़ देते थी आपके द्वारा सृजिन चेतन, अचेतन कृतियां सब एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट हैं। आपके जीवन में अलौकिक ज्ञान का सहृदयता का समन्वय अन्य साधु-संतों से आपके व्यक्तित्व को पृथक करता है। यह दोनों गुण जिस व्यक्ति में समाहित हो जाते हैं। वे जनमानस की श्रद्धा के आराध्य बनकर परम लक्ष्य शिवपुर के सोपान पर उत्तरोत्तर प्रगति कर जाते हैं।आपके द्वारा विश्व को मानव उत्थान और जनकल्याण के हेतु से किया गया अनोखा तथा खूबसूरत उपहार श्री भोपावर महातीर्थ हैं। आपका प्रेरणापुंज श्री भोपावर महातीर्थ आज पूरे भारत की अंगूठी में नगीना बनकर चमक रहा है और इतिहास में युगों-युगों तक आपकी गौरवगाथा गाएगा।

परम पूज्य मालव भूषण गुरुदेव आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी महाराजा ने कभी भी अपने जीवन में संख्या को नहीं गुणात्मकता को महत्व दिया है। न तो उन्होंने ज्यादा तीर्थ बनाए, न ही ज्यादा मंदिरों का निर्माण कराया। आपश्री ने अपनी संयम साधना में मात्र एक ही सपना संजोया जो भारत के सैकड़ों तीर्थों से बढ़कर है। मुनियों की भीड़ नहीं लगाई, पर उनका एक-एक शिष्य समाज में सौ-सौ मुनि के बराबर धर्म प्रभावना कर लाखों को सत्पथ पर लगाकर जिन शासन की धर्म ध्वजा फहरा रहे हैं। आचार्यश्री ने बड़े-बड़े ग्रंथ नहीं लिखे पर उनके द्वारा कही गई छोटी-मोटी बातें संपूर्ण ग्रंथों का सार अपने में समाहित किये हुए हैं।

ऐसे मानवता के मसीहा, वात्सल्य के सागर श्रमण के संरक्षक, साधना और संकल्प के हिमालय, समता की वसुंधरा अध्यात्म के अनन्त प्रकाश, करुणा की प्रतिमूर्ति, सम्यक -ष्टा आत्म साधक के चरणों में अपना सिर नवाकर यही आशीष पाना चाहता हूं- हे गुरुदेव ! आपने मेरे तुच्छ हृदय में अपना जो प्रेम प्रकट किया है उसे जीवन की अंतिम सांस तक संभाल कर रखूं। यहीं मेरे हृदय की सबसे बड़ी चाह हैं। आपश्री जहां भी है वहां मेरी अनन्त वंदना स्वीकारें !

- डॉ. सुभाष जैन

श्री अन्तरिक्षजी तीर्थ का इतिहास

वर्तमान काल में सबसे प्राचीन जैन प्रतिमाएं है-

1- श्री नेमिनाथ दादा- गिरनार तीर्थ।

2- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा- शंखेश्वर तीर्थ।

3- श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ दादा- शिरपुरा।

हम सब गिरनार तीर्थ और शंखेश्वर तीर्थ के बारे में तो बहुत कुछ जानते है, किन्तु कुछ अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ के बारे में हमें अधिक जानकारी नहीं है।

श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ तीर्थ की कुछ मुख्य बातें:-

42 इंच की अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा 11,80,000 वर्ष प्राचीन है। प्रतिमाजी मिट्‌टी और गाय के गोबर से बनी प्रभु मुनिसुव्रत स्वामी के काल में भी पूजी गई थी। इस भव्य चमत्कारी प्रतिमा का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। श्वेतांबर मान्यतानुसार कहा जाता है, राजा रावण के बहनोई पाताल लंका के राजा खरदूषण के सेवक माली व सुमाली ने पूजा निमित्त इस प्रतिमा को जाते समय प्रतिमाजी को नजदीक के जलकुंड में विसर्जित किया था। शताब्दियों तक प्रतिमा जलकुंड में अदृश्य रही जो कि विक्रम सं. 1142 में चमत्कारिक घटनाओं के साथ पुनः प्रकट हुई। तत्पश्चात श्री भावविजयजी गणी के सपुदेश से मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर उन्हीं के सुहस्ते विक्रम संवत् 1715 चैत्र शुक्ल-5 के दिन शुभ मुर्हूरत में प्रतिष्ठा पुनः सम्पन्न हुई।

रामसेवक माली और सुमाली अनवधान से पूजा के लिए प्रतिमा लाना भूल गए थे, इसलिए पूजा के निमित्त यहां पर इस स्थान से वापिस जाते समय नजदीक के जलकुण्ड में विसर्जित किया था। प्रतिमा शताब्दियों तक जलकुण्ड में अदृश्य रही है।

समयान्तर में इस कुण्ड के जल का उपयोग करने पर एलीचपुर के राजा श्रीपाल का कुष्टरोग निवारण हुआ। इस आश्चर्यमयी घटना पर विचार विमग्न चिंतन करते समय राजरानी को स्वप्न में दुष्टन्त हुआ कि इस जलकुण्ड में श्री पार्श्वप्रभु की प्राचीन व चमत्कारिक प्रतिमा विराजमान करके खुद सारथी बनकर मन चाहे वहां निशंक मन से ले जा सकता है। शंका करना नहीं व न पीछे मुड़कर देखना। उक्त दुष्टान्त पर राजा द्वारा अन्वेषण करवाने पर प्रतिमा प्राप्त हुई। राजा ने प्रतिमाजी को विशाल जनसमूह के बीच धूमधाम के साथ वैसे ही वाहन पर रखकर उसे एलिचपुर ले जाने का उपक्रम किया, वाहन के साथ प्रतिमा चली पर बीच में राजा के मन में शंका हुई कि इतनी बड़ी प्रतिमा गाड़ी के साथ आती है या नहीं इसलिए उसने शांत हृदय से पीछे मुड़कर देखा तो प्रतिमाजी उसी जगह पर एक पेड़ के नीचे आकाश में उधार स्थिर हो गई। कहा जाता है उस समय इस प्रतिमाजी के नीचे से घुड़सवार निकल जाय इतनी ऊंची उधार थी।

राजा इस चमत्कारिक घटना से प्रभावित हुआ। वहीं पर एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया व उस मंदिर में प्रभु को प्रतिष्ठित करवाना चाहा। प्रतिष्ठा के समय राजा के मन में अहंकार आ जाने के कारण, लाख कोशिश करने पर भी प्रतिमा अपने स्थान से नहीं हिली। मंदिर सुना का सुना ही रहा। जो आज भी ''पावली मंदिर'' के नाम से प्रसिद्ध है जिस पेड़ के नीचे प्रतिमा स्थिर हुई थी वह भी मंदिर के नजदीक ही स्थित है। प्रतिष्ठा के समय उपस्थित आचार्य श्री अभयदेव सूरीश्वरजी के उपदेश से श्री संघ ने गांव के बीच एक दूसरा विशाल संघ मंदिर बनवाया और राजा के सान्धिय में संघ मंदिर में प्रतिष्ठा करवाने का निर्णय लेने पर प्रतिमाजी का संघ मंदिर में आगमन हुआ और बड़े उत्साह व मंगल ध्वनि के साथ प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

वि.सं. 1715 में श्री भावविजयगणीजी को प्रभु दर्शन की अभिलाषा होने पर अंतरिक्षजी आए व भाव से प्रभु दर्शन करने पर आंखों की गई रोशनी फिर से आई, अंधापा दूर हुआ। उन्होंने यहां रहकर जीर्णोद्धार करवाया वि.सं. 1715 चैत्र शुक्ल 5 को पुनः प्रतिष्ठा करवाई उस समय प्रतिमाजी जमीन से एक अंगुल प्रमाण अधार रही, जो अभी भी यथावत है लेकिन वर्तमान में काल के प्रभाव से बायं किनारे पर नहींवत बिन्दु मात्र भाग का स्पर्श हुआ नजर आता है।

चमत्कारः- श्री भाव विजयजी गणी को आंख का भयंकर रोग लागू पड़ा था। विजयदेवसूरीजी की सूचना से उन्होंने पद्मावती मंत्र की आराधना की। पद्मावती देवी ने अंतरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु का इतिहास व महत्व समझाया।

पू. भावविजयजी गणी संघ सहित अंतरिक्षजी पधारे। उन्होंने प्रभु की भावपूर्वक भक्ति की उस भक्ति के प्रभाव से

उनका अंधत्व दूर हो गया। उनके नेत्रपटल खुल गए। यह रोमांचक घटना वि.सं. 1715 में बनी। इस मंदिर का पुनः जीर्णोद्धार हुआ और 1717 चैत्र सुद-5 का पुनः प्रतिष्ठा हुई। प्रतिमाजी देवलोक से स्वयं देवी ने की है न कि किसी मनुष्य ने। इस प्रतिमाजी का जिक्र सकल तीर्थ वंदना में आता है जो रोजाना प्रातः प्रतिक्रमण में बोली जाती है! इसी से इसकी महत्वता का पता चलता है!

परम पावन, प्रगट प्रभावी, अत्यंत प्राचीन, ऐतिहासिक श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु की महिमा का वर्णन करना लगभग असंभव ही है। इतना महत्व का होते हुए भी बहुत कम लोगों को इस महान तीर्थ की जानकारी है।

शिरपुर नजदीक अकोला, महाराष्ट्र में स्थित इस तीर्थ के दर्शन वंदन कर अपना जीवन सफल बनाएं। अभी कुछ दिनों पहले प्रतिमाजी के ऊपर लेप किया गया है।

आने वाली चोवीसी में होने वाले तीर्थंकर...!

1- श्रेणिक राजा का जीव, प्रथम नरक से आकर पहले **श्री पद्मनाथजी** होंगे।

2- श्री महावीर स्वामीजी के काका सुपार्श्वजी का जीव, देवलोक से आकर दूसरे **श्री सूरदेवजी** होंगे।

3- कोणिक राजा का पुत्र उदाई राजा का जीव, देवलोक से आकर तीसरे **श्री सुपार्श्वजी** होंगे।

4- पोट्टिला अनगार का जीव, तीसरे देवलोक से आकर चौथे **श्री स्वयंप्रभजी** होंगे।

5- दृढ़ युद्ध श्रावक का जीव, पांचवें देवलोक से आकर पांचवें **श्री सर्वानुभूतिजी** होंगे।

6- कार्तिक सेठ का जीव, प्रथम देवलोक से आकर छठे **श्री देवश्रुतीजी** होंगे।

7- शंख श्रावक का जीव, देवलोक से आकर सातवें **श्री उदयनाथजी** होंगे।

8- आणन्द श्रावक का जीव, देवलोक से आकर आठवें **श्री पेढ़ालजी** होंगे।

9- सुनंद श्रावक का जीव, देवलोक से आकर नववें **श्री पोट्टिलजी** होंगे।

10-पोखली श्रावक के धर्म भाई शतक श्रावक का जीव, देवलोक से आकर दसवें **श्री सतकजी** होंगे।

11-श्री कृष्णजी की माता देवकी रानी का जीव, नरक से आकर ग्यारहवें **श्री मुनिसुव्रतजी** होंगे।

12-श्री कृष्णजी का जीव, तीसरी नरक से आकर बारहवें **श्री अममजी** होंगे।

13- सुजेष्टा का पुत्र, सत्यकी रुद्र का जीव, नरक से आकर तेरहवें **श्री निःकषायजी** होंगे।

14-श्री कृष्णजी के भ्राता बलभद्रजी का जीव, पांचवें देवलोक से आकर चौदहवें **श्री निष्पुलाकजी** होंगे।

15-राजगृही के धन्ना सार्थवाही की पत्नी सुलसा श्राविका का जीव, देवलोक से आकर पन्द्रहवें **श्री निर्ममजी** होंगे।

16-बलभद्रजी की माता रोहिणी का जीव, देवलोक से आकर सोलहवें **श्री चित्रगुप्तजी** होंगे।

17-कोलपाक बहराने वाली रेवती गाथा पत्नी का जीव, देवलोक से आकर सत्रहवें **श्री समाधिनाथजी** होंगे।

18- सततिलक श्रावक का जीव, देवलोक से आकर अठारहवें **श्री संवरनाथजी** होंगे।

19- द्वारका दाहक द्वीपायन ऋषि का जीव, देवलोक से आकर उन्नीसवें **श्री यशोधरजी** होंगे।

20- करण का जीव, देवलोक से आकर बीसवें **श्रीविजयजी** होंगे।

21-निर्ग्रन्थ पुत्र मल्लनारद का जीव, देवलोक से आकर इक्कीसवें **श्री मल्यदेवजी** होंगे।

22- अम्बड़ श्रावक का जीव, देवलोक से आकर बाइसवें **श्री देवचन्द्रजी** होंगे।

23- अमर का जीव, देवलोक से आकर तेइसवें **श्री अनन्तवीर्यजी** होंगे।

24- सतकजी का जीव, सर्वार्थसिद्ध विमान से आकर चौबीसवें **श्री भद्रंकरजी** होंगे।

लौकिक भाव को छोड़कर, वाचाज्ञान को त्यजकर, कल्पित विधि-निषेध से दूर रहकर जो जीव प्रत्यक्ष ज्ञानी की आज्ञा का आराधन कर, तथारुप उपदेश को पाकर, तथारुप आत्मार्थ में प्रवृत्ति करता है उसका अवश्य कल्याण होता है।

क्या मूंग जल गये थे ?

श्री वर्धमान तप के महातपस्वी 167 ओलीजी करने वाले महान तपाचार्य मालव भूषण, मालव के सुप्रसिद्ध जैनाचार्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के जीवन का एक अद्भूत प्रसंग अभी मेरी जानकारी में आया है। मैंने इस वर्ष वर्धमान ओलीजी की आराधना के लिये पाया डाला था विदिशा से भी एक बहन जिनका नाम आशा बहन है, उन्होंने भी पाया डाला था। संयोग हुआ कि आयंबिल करने हम आसपास ही बैठे हुए थे कि चर्चा चल निकली। मैंने कहा- हमारे गुरुदेव तो 147 ओली पूर्ण हो गई है।तो वे बोली क्या आपके गुरुदेव आचार्यदेवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराज है ? मैंने कहा- हां। वे ही है। तो बोली- भैय्या ! वे तो एक अद्भूत संत है, मै तो उनके प्रति बहुत ही आदर-भाव रखती है। मैंने उन महान संत के जब दर्शन किये थे तब कि एक घटना, प्रसंग है। चर्चा में हमारा आयंबिल रुक सा गया। उन्होंने मुझे बताया कि -पूज्य गुरुदेव का विहार कुछ वर्षों पहले विदिशा-रायसेन की ओर हुआ था। यह घटना रायसेन की है। उन दिनों साहिबजी को ओलीजी की आराधना चल रही थी। उस समय विहार यात्रा में कुछ साध्वीवर्या भी साथ ही में थी उन्हें भी आयंबिल करना था, वे गोचरी व्होराकर लाये और जब गोचरी में मूंग वापरे तो खाते ही वे चितिंत हो गये, क्योंकि जो मूंग गोचरी के लिये व्होराकर लाये थे वे सब मूंग जल गये थे और वे खाने में बहुत कड़वे और खराब लग रहे थे। साध्वीजी ने अपनी गोचरी तो वापर ली पर वे तुरन्त साहेबजी के पास आई। साध्वीजी ने गुरुदेव से पूछा- आपश्री ने वापर लिया क्या ? साहेबजी बोले- हां। मेरी गोचरी हो गई है। साध्वीजी ने आश्चर्यचकित होते हुए पुन: साहेबजी से कहा- साहेबजी ! मूंग तो पूरी तरह से जल गये थे ? आपने कैसे वापरे होंगे ? तभी साहेबजी ने साध्वीजी से प्रतिप्रश्न पूछा- क्या मूंग जल गये थे ? जले हुए मूंग और वह भी आयंबिल में और साधु की गोचरी में पूज्य गुरुदेव की गोचरी में ? साहेबजी ने किसी को भी कुछ नहीं कहा और गोचरी कर उपाश्रय में आकर पाट पर विराजमान हो गये। उन साध्वीजी ने भी आयंबिल किया था तो पता चला कि साहेबजी ने जले और कड़वे मूंग का आयंबिल किया था। आश्चर्य होता है ऐसा त्यागी ,सहज, सरल समभावी 36 गुणी भंडारी गुरुदेव की निश्रा पाकर, ज्ञान, ध्यान और तपस्या के ऐसे तेजस्वी पुंज प्रकाश के आलौकिक पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा से अनायास ही सिर वंदना में झुक जाता है। तपाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराज एक अनुपम, अनोखे साधना सिध्दि में निमग्न अद्भूत व्यक्तित्व के धनी जैन संत है। पूज्यश्री के दर्शन वंदन करना अपने आप में सौभाग्य और गर्व गौरव की बात है। श्री वर्धमान तप ओलीजी की आराधना में कुंदन बने गुरुदेव को हमारी शत् -शत् वंदना।

संयम जीवन पाना है....

✻ मुनिश्री राजसुंदरविजयजी म.सा. (डी.लीट्.)

संयम संयम संयम, संयम जीवन पाना है,
संयम संयम संयम, प्रभु का पथ सुहाना है,
प्रभु एक कदम मैं आया हूं,
अब आपको लेने आना है,
संसार से मोक्ष की यात्रा में,
मुझे आपको लेके जाना है... 1
मेरे जीवन की नौका को किनारे का इंतजार नहीं,
दरबार मिला तेरा मुझको, अब औरों का दरकार नहीं,
ख्वाहिश है, प्रभु इक मेरी,
बस तुझमें मुझको डुबाना है... 2
नन्हा हूं, मैं तन्हा हूं, तेरी राहों से और जवाब नहीं,
घुमा लिया बाहों में तूने,
अब मुक्ति का मुझे ख्वाब नहीं,
मुझे संयम जीवन लेना है,
तुझे मिलन का यही तो बहाना है ... 3

14 राजलोक में श्रीसीमंधर स्वामी भगवान कहां विचर रहे है ?

✻ तीर्थंकर कर्मभूमि में ही होते हैं। उनके अलग-अलग विभाग को विजय कहते हैं। ऐसे 1 विजय में 1 ही तीर्थंकर होते हैं।

✻ जंबुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में 32 ''विजय'' है। भरत क्षेत्र में 1 ''विजय'' है, और ऐरावत क्षेत्र में 1 ''विजय'' है इसलिये सब मिलकर 34 ''विजय'' है।

✻ घातकीखंड जंबुद्वीप से 2 गुना है, इसलिये घातकीखंड में 68 ''विजय'' है।

✻ अर्धपुष्करावर्त खंड भी घातकी खंड जितना है, इसलिये वहां भी 68 ''विजय'' है।

✻ पुष्करावर्त का बाकी का भाग मनुष्य क्षेत्र से बाहर है, इसलिये वहां ''विजय'' की गिनती नहीं होती।

18 पाप स्थान

1- प्राणातिपात- जीवों की हिंसा करना।
2- मषावाद-असत्य झूठ बोलना।
3- अदतादान- चोरी बिना दिये लेना।
4- मैथुन- कुशील अब्रहाचार्य।
5- परिग्रह- धनादिक द्रव्य ज्यादा।
6- क्रोध- गुस्सा कोप रोष किया।
7- मान- घमंड अहंकार किया।
8- माया- कपट छल किया।
9- लोभ- तष्णा लालच किया।
10-राग- जीव का वैभाविक ममत्व।
11-द्वेष- जीव का वैभाविक वैर।
12-कलह- क्लेश झगड़ा करना।
13-अभ्याख्यान- झूठा कलंक लगाना।
14-पैशून- चुगली और दोष किया।
15-परपरिवाद-बुराई निंदा करना।
16-रति-अरति- संयम में चित नहीं लगाना।
17-माया-मषावाद- कपट सहित झूठ बोलना।
18-मिथ्यादर्शनशल्य-श्रद्धा का विपरीत होना।

जंबुद्वीप में 34 ''विजय''
घातकीखंड में 68 ''विजय''
अर्धपुष्करावर्त में 68 ''विजय''
सभी मिलाकर 170 विजय होते है।

✻ जिस काल में दरेक क्षेत्र में तीर्थंकर होते है, वो काल में तीर्थंकर की उत्कृष्ट संख्या 170 की होती है।

✻ अजितनाथ भगवान के समय में ऐसे दरेक विजय में एक-एक तीर्थंकर विचर रहे थे। अजितनाथ भगवान के समय उत्कृष्ट 170 तीर्थंकर विचर रहे थे।

✻ वर्तमानकाल में 20 तीर्थंकर विचर रहे हैं। ये संख्या जघन्यकाल की है।

✻ अभी जंबुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में 8, 9, 24 और 25 विजय में एक-एक तीर्थंकर विचर रहे हैं। इसलिए जंबुद्वीप में 4 तीर्थंकर विचर रहे हैं।

✻ घातकीखंड में उसकी संख्या 2 गुनी है। इसलिये वहां 8 तीर्थंकर विचर रहे है।

✻ अर्धपुष्करावर्त में भी 8 तीर्थंकर विचर रहे है।

जंबुद्वीप में 4 तीर्थंकर
घातकीखंड में 8 तीर्थंकर
अर्धपुष्करावर्त में भी 8 तीर्थंकर
ऐसे जघन्यकाल में 20 तीर्थंकर विचरते है।

हम कई बार कहते है कि हमें सीमंधर स्वामी के पास जाना है। ऐसा हम क्यूं कहते है ?

सीमंधर स्वामी भगवान हम से सबसे नजदीक में है। वो तीर्थंकर हमसे सबसे ज्यादा पास में है। जंबुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र के 8, 9, 24, 25 विजय तीर्थंकर है। ये जो 8 नाम की विजय है, वो विजय में ही सीमंधर स्वामी भगवान विचर रहे है। इसलिये सबसे ज्यादा नजदीक सीमंधर स्वामी ही है।

✻ अमुक समय तक अनुकूल प्रसंगयुक्त संसार में कदाचित् कुछ सत्संग योग हुआ हो तो भी उससे इस काल में वैराग्य का योग्य रुप में वेदन होना कठिन है। परन्तु बाद में प्रतिकूल ऐसा कोई कोई प्रसंग बनता रहा हो, तब उसकी सोच से या विशेष विचार से सत्संग हितकारी हो जाता है। ऐसा जानकर जिस किसी प्रतिकूल प्रसंग की प्राप्ति हो, उसे आत्मसाधन का कारण रुप मानकर समाधिपूर्वक जाग्रत रहना। कल्पित भाव में किसी तरह भूलना योग्य नहीं है।

यह वर्ष
पूज्यपाद आगमोध्धारक
श्री सागरानंदसूरीजी महाराजा
के जन्म का 150 वां वर्ष है
जन्म दिवस श्रावण वदी अमावस्या
दिनांक 4 अगस्त 2024 पर आपके
श्रीसंघ में पूज्यपाद श्री के स्मरण स्वरुप
पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन कर गुरु गौरव
गाथा के साथ गुणानुवाद सभा करने की प्रेरणा है।

गुरुदेव आनंद सागर

तुम दीन दयाल कृपालु
गुरुदेव आनंद सागर
बेटे हो माँ जमना के
चल दिये प्रभु के होकर,
नहीं मिलती और मिसाल
गुरुदेव झावेर सागर।
वाणी में भरा एक जादू है,
अमृत से अधिक सुस्वाद है,
प्रवचन है बड़ा कमाल।
गुरुदेव आनंद सागर।
आप इस समाज के गौरव हो
जीवन शक्ति हो, वैभव हो
हम तुमसे है माला माल
गुरुदेवआनंद सागर ।
हे नमस्कार गुरुदेव तुमको
कर जोड़ करते वंदन हम
चरणों में मस्तक डाल
गुरुदेवआनंद सागर।

एक नक्षत्र में 5 कल्याणक किस परमात्माजी के हुए....

1- श्री पद्मप्रभु भगवान के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ? **- चित्रा नक्षत्र**

2- श्री सुविधिनाथजी प्रभु के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ?**- मूला नक्षत्र**

3- श्री शीतलनाथजी प्रभु के पांच कल्याणक किस नक्षत्र में हुए ?**- पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**

4- श्री विमलनाथजी भगवान के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए है ? **- उत्तराभाद्र पद नक्षत्र**

5- श्री अनंतनाथजी प्रभु के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ? **- रेवती नक्षत्र**

6- श्री धर्मनाथजी प्रभु के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ? **- पुष्प नक्षत्र**

7- श्री शांतिनाथ प्रभु के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ? **- भरणी नक्षत्र**

8- श्री कुंथुनाथजी प्रभु के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ? **- कृतिका नक्षत्र**

9- श्री अरनाथजी भगवान के किस नक्षत्र में पांच कल्याणक हुए ? **- रेवती नक्षत्र**

10-श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी के पांच कल्याणक किस नक्षत्र में हुए ?**- श्रवण नक्षत्र**

घोर अंधकार में गुरूमंत्र बने उजाला

* डॉ.सुभाष जैन

कुछ महान महर्षि ऐसे होते है जो अपने महान एवं अविस्मरणीय कृतित्व से धर्म, समाज और अपने युग पर ऐसी अमित छाप छोड़ जाते है जो सहस्ताब्दियों तक न सिर्फ अविस्मरणीय होती है बल्कि ऐसे महान गुरू समकालीन के साथ भावी पीढ़ियों को भी अपने विशिष्ट कर्म पथ पर कर्मठता के साथ अग्रेसित होने की प्रेरणा देते है, पूज्यपाद गुरूदेव श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा जैसे अध्यात्म-पुरूधामों के असमय चले जाने जैसी मेरे जीवन की सबसे अपूरणीय क्षति वाली घटना मुझे आज भी यह विश्वास नहीं करवा पा रही है कि गुरूदेव हमारे बीच नहीं रहे है। कैसे विश्वास करूं? यह भी समझ नहीं पा रहा हूं ,लेकिन इस भवसागर में जीवन मृत्यु के अटल सत्य को स्वीकार कर मेरे मन एवं हृदय को यह मानने के लिये मजबूर होना पड़ रहा है कि अपने असीम माधुर्य और गुरूदेव से मेरे जीवन को दिशा देनेवाले गुरूत्व से मैं वंचित हो चुका हूं, लाखों लोगों की आस्था का दीया बुझ चुका है

हम सबको मोह जाल में बांधने वाले निर्मोही गुरूदेव ने मोह-माया-लगाव-अलगाव से अपने को दूर कर लिया था। पूज्यपाद गुरूदेवश्री के देवलोक गमन से मन व्यथित और अशांत ही बना हुआ है, क्यों गुरूदेव, अकेला छोड़ गये? कैसे इस क्रूर सत्य और नियति की सत्यता को स्वीकार करें हम? क्योंकि अभी पूज्यपादश्री की जैन जगत को बहुत आवश्यकता थी, हम सबको भी अभी गुरूदेव की आवश्यकता थी। पूज्यश्री हमेशा ही भक्तों के प्रति अति उदार थे, उनसे अभी बहुत कुछ प्राप्त करना था। पूज्यश्री देने को भी तत्पर रहते थे लेकिन भाग्य और काल की सत्यता के समक्ष हम सब मजबूर है, बेबस है। पूज्यपादश्री को यूं चले जाना अत्यधिक पीड़ाजनक है। यह जैन जगत की अपूरणीय क्षति है ऐसे महर्षि युगों-युगों में एक ही पैदा होता है, इसीलिये मैं अक्सर कहता था कि-यह हमारा सौभाग्य कि गुरूदेव हमारे युग में पैदा हुए और हमारा यह परम सौभाग्य है कि हम गुरूदेव के युग में पैदा हुए और ऐसी महान आत्मा का संत्सग मिला।

पूज्य गुरूदेवश्री के जाने के बाद कुछ घटनाओं पर चिंतन करने पर अब यह लगता है कि पूज्यश्री को यह आभास हो चुका था या उन्हें यह ज्ञात था कि अब मुझे किसी दूसरे उच्च लोक में जाना है लेकिन हम संसारी, आध्यात्मिकता के संकेत को समझने की शक्ति कहां हमारी? सबको अपने से दूर कर एकांत में, अज्ञात स्थान पर, परन्तु गुरूदेव को तो ज्ञात था कि मुझे मुनिरत्नम् के आवास पर इस देह को त्यागना है। राजगढ़ (मध्यप्रदेश) में जन्म और दूर एकांत दक्षिण भारत के वेल्लुर के पास एक अज्ञात स्थान पर मृत्यु को आमंत्रण देकर संसार से मुक्त हो जाना बड़ा ही रहस्यमय लगता है। दैहिक पीड़ा से मुक्त होकर गये गुरूदेव अपनी त्याग, तपस्या, साधना की संकल्पता के लिये हमारे बीच सदा स्मरणीय रहेंगे। अपने जीवन में सदा ही पद विहारी रहे गुरूदेव ने डोली को भी स्वीकार नहीं किया और अपने स्वाध्याय और देह की परवाह किये बगैर जैन धर्म के मान मर्दन को सुरक्षित रखा।

मानवीय सर्वोत्कृष्टता की श्रमण संस्कृति के तपपूत संयमी साधक पूज्यपादश्री ने दैहिक, प्रहारों से बेखबर अपनी तपस्या साधना और अंतिम समय में त्याग के जो भाव दिखाये वे गुरूदेव को निश्चित रूप से 12 वें देवलोक में भी उच्चकोटी के देव के रूप में प्रतिष्ठित करेंगे, वहां से हमारे संसार को अपना धर्मलाभ प्रदान करते हुए अमिदृष्टि की वर्षा करते रहेंगे। पूज्यपाद गुरूदेव उस सूर्य के समान थे जो बिना किसी भेदभाव के महलों और झोपड़ियों को समान रूप से उजाला प्रदान करता है। श्रमण संस्कृति को अक्षुण्य बनाये रखनेवाले संतों में, साधकों में पूज्यपाद गुरूदेवश्री का नाम अग्रणी होने के साथ हमेशा गौरव से याद किया जाता रहेगा। गुरूदेवश्री के किन-किन गुणों का मैं बखान करूं? श्रद्धेय गुरूदेव का व्यक्तित्व फूलों के गुलदस्ते की भांति था,आपश्री का मंदिम मुस्कराता चेहरा, सरल स्वभाव, दर्याद हृदय,निस्कपट व्यवहार,उदार विचार, सिद्धांत मर्मज्ञता, जप, तप, मंत्र,यंत्र, तंत्र के सिद्ध साधक, चंद्रसी शीतलता, सूर्य सम तेज पृथ्वीसम क्षमाशीलता, अनुकम्पशील विशाल हृदय, ऐसे गुणों से सुसज्जित, सुशोभित गुरूदेव के बारे में लिखना मतलब सीप की अंजली में महासागर को समेटना, छोटी सी दीवार में सूर्य को भरना, नन्हें पंखों में अनंत आकाश को भरने जैसा है। गुरूदेवश्री का समस्त जीवन, परोपकार, जीवोद्धार, समाजोद्धार सद्विचार, और सौम्यता तथा आध्यात्मिकता की अनमोल धरोहर बन चुका है। पूज्यश्री ने उस क्षितिज को छू लिया है जहां पहुंचने के लिये लोगों अनेक भवों तक भटकना पड़ेगा।

पूज्यपादश्री के गुण ही उनके गुरूमंत्र है। पूज्यश्री ने असंख्य धर्मनिष्ठों को सात्विकता और सदाचार के जो पावन संस्कार दिये उनके आचरण का यही वक्त है। गुरूदेवश्री की विचारधारा और उनके कार्यों की पूर्णता का संकल्प ही पूज्यश्री को सच्ची आदरांजलि होगी। मेरा यह मानना है कि चाहे गुरूदेव हमारे समक्ष सदेह नहीं है लेकिन पूज्यश्री की विचारधारा हमें हमेशा जीवनपथ पर एक नई दिशा बोध प्रदान करती रहेगी। पूज्यपाद गुरूदेवश्री को सादर भावांजलि।

मार्मिक कहानी:-

नाम का आश्रय...!

वृंदावन की एक गोपी रोज दूध दही बेचने मथुरा जाती थी, एक दिन वज्र में एक संत आये, गोपी भी कथा सुनने गई। संत कथा में कह रहे थे, भगवान के नाम की बड़ी महिमा है, नाम से बड़े-बड़े संकट भी टल जाते है, नाम तो भव सागर से तारने वाला है, यदि भव सागर से पार होना है तो भगवान का नाम कभी मत छोड़ना। कथा समाप्त हुई, गोपी अगले दिन फिर दूध दही बेचने चली, बीच में यमुनाजी थी, गोपी को संत की बात याद आई, संत ने कहा था- भगवान का नाम तो भवसागर से पार लगाने वाला है। जिस भगवान का नाम भवसागर से पार लगा सकता है तो क्या उन्हीं भगवान का नाम मुझे इस साधारण सी नदी से पार नहीं लगा सकता ? ऐसा सोचकर गोपी ने मन में भगवान के नाम का आश्रय लिया, भोली भाली गोपी यमुनाजी की ओर आगे बढ़ गई, अब जैसे ही यमुनाजी में पैर रखा तो लगा मानो जमीन पर चल रही है और ऐसे ही सारी नदी पार कर गई, पार पहुंचकर बड़ी प्रसन्ता हुई और मन में सोचने लगी कि संत ने तो ये तो बड़ा अच्छा तरीका बताया पार जाने का, रोज-रोज नाविक को भी पैसे नहीं देने पड़ेंगे।

एक दिन गोपी ने सोचा कि संत ने मेरा इतना भला किया मुझे उन्हें खाने पर बुलाना चाहिये। अगले दिन गोपी जब दही बेचने गई, तब संत से घर में भोजन करने को कहा- संत तैयार हो गए, अब बीच में फिर यमुना नदी आई। संत नाविक को बुलाने लगा तो गोपी बोली- बाबा नाविक क्यों बुला रहे है, हम यमुनाजी में चलेंगे।

संत बोले- गोपी ! कैसी बात करती हो, यमुनाजी को ऐसे ही कैसे पार करेंगे ?

गोपी बोली- बाबा ! आप ने ही तो रास्ता बताया था, आपने कथा में कहा था कि भगवान के नाम का आश्रय लेकर भवसागर से पार हो सकते है। तो मैंने सोचा जब भव सागर से पार हो सकते है तो यमुनाजी से पार क्यों नहीं हो सकते ? और मैं ऐसा ही करने लगी, इसलिए मुझे अब नाव की जरुरत नहीं पड़ती।

संत को विश्वास नहीं हुआ बोले- गोपी तू ही पहले चल ! मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आता हूं। गोपी ने भगवान के नाम का आश्रय लिया और जिस प्रकार रोज जाती थी वैसे ही यमुनाजी को पार कर गई, अब जैसे ही संत ने यमुनाजी में पैर रखा तो झपाक से पानी में गिर गए, संत को बड़ा आश्चर्य ! अब गोपी ने जब देखा तो कि संत तो पानी में गिर गए है तब गोपी वापस आई है और संत का हाथ पकड़कर जब चली तो संत भी गोपी की भांति ही ऐसे चले जैसे जमीन पर चल रहे हो।

संत तो गोपी के चरणों में गिर पड़े, और बोले- कि गोपी तू धन्य है ! वास्तव में तो सही अर्थो में नाम का आश्रय तो तुमने लिया है और मैं जिसने नाम की महिमा बताई तो सही पर स्वयं नाम का आश्रय नहीं लिया.... सच में भक्त मित्रों हम भगवान नाम का जप एवं आश्रय तो लेते है पर भगवान नाम में पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा नहीं होने से हम इसका पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं कर पाते...! शास्त्र बताते है कि भगवान श्री कृष्ण का नाम इतने पापों को मिटा सकता है जितना कि एक पापी व्यक्ति कभी कर भी नहीं सकता...!

अतएव भगवान नाम पे पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखकर हृदय के अंतकरण से भाव विहल होकर जैसे एक छोटा बालक अपनी माँ के लिए बिलखता है.... उसी भाव से सदैव नाम प्रभु का सुमिरन करें।

गुरु के शरीर के हर एक अंग मेरा जीवन कल्याण !

1- गुरु के नैन- हमारा चैन !
2- गुरु का मस्तक- हमारे भाग्य की दस्तक !
3- गुरु का मुख- हमारा सुख !
4- गुरु के कान- हमारा ध्यान !
5- गुरु का दिल-हमारी मंजिल !
6- गुरु के हाथ- हमारे साथ !
7- गुरु के चरण- हमारी शरण !
8- गुरु की नाक- हमारी साख !
9- गुरु का गला- हमारा भला !
10-गुरु की आत्मा- हमारे दुःखों का खात्मा !

जैनधर्म से अनुराग...........

दरिद्री या दास बनना भी मुझे पसंद होगा परन्तु जैनधर्म से रहितचक्रवर्ती बनना मुझे मान्य नहीं।

श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ महिमा....

श्री प्रभसूरी रचित श्री फलवृद्धिकल्प में लिखा है कि 68 तीर्थों की यात्रा करने से जो फल मिलता है। वह इस तीर्थ की यात्रा करने से मिलता है। ''समरो मन्त्र भलो नवकार'' के स्तवन में भी ऐसा कहा गया है ''अड़सठ अक्षर एहना जानो अड़सठ तीर्थ सार'' इससे भी अड़सठ तीर्थ की पुष्टि होती है। पालीताना से निकलने वाले मासिक कल्याण पत्र वर्ष 14 अंक फागण 2013 के पृष्ठसं. 6 में आचार्य श्री विजयलब्धि सूरिश्वरजी म.सा. इन तीर्थो के नाम निम्न बताएं है।

1- शत्रुंजय, 2- गिरनार, 3- आबूजी, 4- अष्टापद 5- सम्मेतशिखर, 6- मंड पाचल (मांडवगढ़), 7- चंड पांचाल, 8- अयोध्या, 9- कलीकुंड पार्श्वनाथ, 10- नाकोड़ा पार्श्वनाथ, 11- जीरावला, 12- वाराणसी, 13- गोड़ी पार्श्वनाथ, 14- नव पल्लव पार्श्वनाथ, 15- चिन्तामणि पार्श्वनाथ, 16-द्राविड़तीर्थ, 17- मनोसुव्रत, 18- भामा तीर्थ, 19- सांचौरी, 20- महावीर, 21- मदूरी तीर्थ, 22- शरीसा 23- रावण तीर्थ, 24- अज्जारा तीर्थ, 25- बालेजा तीर्थ, 26- माला तीर्थ, 27-प्रतिष्ठानपुर, 28- अन्तरिक्षजी, 29- कुलपाकजी, 30- शुलाहारी, 31- उखेरवडीयो, 32- क्षत्रियकुण्ड, 33-शंखेश्वरजी, 34-लाड़ण पार्श्वनाथ, 35-भटेवा पार्श्वनाथ, 36- सहस्त्रफण पार्श्वनाथ, 37-बरकाणा पार्श्वनाथ, 38- बामनवाड़ीजी पार्श्वनाथ, 39- पंचासरा पार्श्वनाथ, 40- घृतकलोल पार्श्वनाथ, 41- अवन्ती पार्श्वनाथ, 42- थमण पार्श्वनाथ, 43- नवखंडी पार्श्वनाथ, 44- सप्त-फण पार्श्वनाथ, 45- आशापुरी पार्श्वनाथ, 46-करेड़ा पार्श्वनाथ, 47- कोशंबी पार्श्वनाथ, 48- कोशलपुर पार्श्वनाथ, 49- मक्षीजी, 50- काकंदी, 51- भद्रपुरी, 52-सिंहपुरी, 53- कपिलपूरी, 54- रत्नपुरी, 55- मथुरापुरी, 56- राजग्रही, 57- शोरीपुरी, 58- हस्तीनापुर, 59-तलाजी, 60- कदबगिरी, 61- बांगड़ी, 62-बड़नगर, 63-धुलेबा, 64-लोहिया, 65- बाहुबली, 66- महुदेवा, 67- पुडरिक, 68- गौतम तीर्थ।

तीर्थाधिराज श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ भगवान, पद्मासस्थ, श्याम वर्ण,लगभग 105 से.मी. (श्वे. मंदिर)।

तीर्थ स्थल- मेड़ता रोड़ स्टेशन से लगभग 200 मीटर दूर गांव में।

प्राचीनता- यह तीर्थ विक्रम की बारहवीं शताब्दी में पुनः प्रकाश में आया माना जाता है। दुग्ध व बालू से निर्मित चमत्कारी घटनाओं के साथ भूगर्भ से प्रकट इस प्रभु-प्रतिमा की प्रतिष्ठापना वि.सं. 1181 में आचार्य श्री धर्मघोष सूरीश्वरजी के सुहस्ते चतुर्विधसंघ के सन्मुख अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक सुसम्पन्न हुई थी, ऐसा उल्लेख है। वि.सं. 1199 में प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री वादीदेवसूरीश्वरजी के सुहस्ते विराट महोत्सव के साथ यहां प्रतिष्ठा सुसम्पन्न होने का भी उल्लेख है। वि.सं. 1204 में मंदिर में कलश-ध्वजा आरोपण होने का उल्लेख है।

''पुरातन प्रबन्ध संग्रह'' उपदेश तरंगिणि, तपागच्छ पट्टावली व विविध तीर्थ कल्प आदि में इस तीर्थ का विस्तृत उल्लेख है। वि.सं. 1552 में संघपति सूरवंशी श्री शिवराजजी के सुपुत्र श्री हेमराजजी द्वारा इस मंदिर के जीर्णोद्धार करवाने का उल्लेख है। वि.सं. 1653 में इस मंदिर में अन्य जिन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित होने का उल्लेख है। वि.सं. 1935 व वि.सं. 1992 में भी इस मंदिर के जीर्णोद्धार हुए हैं।

विशिष्टता- श्री जिनप्रभ सूरीश्वरजी ने चौदहवीं शताब्दी में रचित ''विविध तीर्थ कल्प'' में इस तीर्थ के दर्शन करने से अड़सठ तीर्थो के दर्शन का लाभ होना बताया है। इस वर्णन का कुछ न कुछ रहस्य अवश्यमेव होगा। इस कल्प में यह भी बताया है कि यहां गोपालक श्री धाँधल श्रेष्ठी की एक गाय दूध नहीं देती थी। गौ-चरवाहे द्वारा उसकी जांच करने पर पता लगा कि एक टींबे के पास पेड़ के नीचे गाय के स्तनों से दूध हमेशा झर जाता है। यह वृत्तांत सेठ से कहा। सेठ को स्वप्न में अधिष्ठायकदेव ने बताया कि जहां दूध झरता है वहां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ प्रभु की सप्तफणी प्रतिमा है। प्रयत्न करने पर वहां से प्रकट होगी, जिसे मंदिर का निर्माण करवाकर प्रतिष्ठित करवाना। धांधल सेठ ने यह वृत्तांत अपने ईष्ट मित्र श्री शिवंकर से कहा। दोनों मित्र अत्यन्त प्रसन्न हुए। स्वप्नानुसार यह भव्य चमत्कारिक प्रतिमा प्राप्त हुई। मंदिर-निर्माण का कार्य प्रारंभ किया गया। अर्थाभाव से कार्य को कुछ रोकना पड़ा। दोनों मित्र व्याकुल थे। अधिष्ठायक देन

ने फिर स्वप्न में प्रकट होकर कहा कि हमेशा प्रातः प्रभु के सम्मुख स्वर्ण मुद्राओं से स्वस्तिक किया हुआ मिलेगा उससे कार्य पूर्ति कर लेना। लेकिन यह बात किसी को मालूम नहीं पड़ने देना। पुनः मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। पांच मण्डप भी बनकर तैयार हो गये। एक दिन सेठ के लड़के ने यह अनोखा दृश्य छिपकर देख लिया। उस दिन से स्वर्ण मुद्राएं मिलनी बन्द हो गयी, जिससे मंदिर कुछ अपूर्ण अवस्था में रह गया। वि.सं. 1181 में जब आचार्य श्री धर्मघोष सूरीश्वरजी पधारे तब श्रीसंघ को उपदेश देकर कार्य को पूर्ण करवाकर प्रतिष्ठा करवाई। सुलतान शाहबुद्दीन ने आक्रमण के समय इस मंदिर पर प्रहार किया, जिससे प्रतिमा भी कुछ खण्डित हो गई परन्तु दैविक शक्ति से वह बीमार पड़कर बहुत ही दुःख का अनुभव करने लगा। इस मंदिर को अखण्डित रखने का अपनी सेना को आदेश दिया। इसलिये मंदिर व प्रतिमा को ज्यादा क्षति नहीं पहुंची व वही प्रतिमा पुनः स्थापित की गयी। यहां के अधिष्ठायक देव जागरुक व चमत्कारी है। प्रतिवर्ष आसोज कृष्णा दशमी व पोष कृष्णादशमी को मेले भरते हैं। उन पावन अवसरों पर जगह-जगह से हजारों नर-नारियां आकर प्रभु भक्ति का लाभ लेते हैं। चमत्कारिक घटनाएं अभी भी घटने के वृत्तांत सुनने में आते रहते हैं।

अन्य मंदिरः- वर्तमान में इस मंदिर के पास ही एक दादावाड़ी हैं।

कला और सौन्दर्यः- प्राचीन प्रभु-प्रतिमा अति ही सुन्दर, चमत्कारी व साक्षात् है। भावपूर्वक वंदन मात्र से आकांक्षाएं पूर्ण होती हैं। यहां पार्श्वनाथ भगवान व महावीर भगवान के भवपट्ट व अन्य पट्ट कलात्मक ढंग से बनाये हुए हैं।

मार्ग दर्शनः- यहां से नजदीक का स्टेशन मेड़ता रोड़ जंक्शन 1/4 कि.मी.दूर है। स्टेशन पर सवारी का साधन उपलब्ध है। मेड़ता सिटी यहां से लगभग 15 कि.मी. दूर है। जोधपुर, मेड़ता सिटी व नागौर से सीधी बसें मिलती है। मंदिर तक पक्की सड़क है, कार व बस आखिर तक जा सकती है। यहां के लिये दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर पंजाब, जम्मू, मुम्बई, अहमदाबाद व कलकत्ता से रेल व्यवस्था है।

सुविधाएंः- ठहरने के लिए मंदिर के अहाते में ही सर्व सुविधायुक्त विशाल धर्मशाला है, जहां पर भोजनशाला सहित सारी सुविधाएं उपलब्ध है।

पेढ़ीः- श्री फलवृद्धि पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट
पोस्ट- मेड़ता रोड़-341511
जिला नागौर, प्रान्त- राजस्थान,
फोन- 01591-52426, 76226

कुछ ऐसी दवायें भी होती है, जिनके उपयोग से बीमारियां नहीं होती:-

1- **कसरत भी एक दवाई है।**
2- **सुबह-शाम घूमना भी एक दवाई है।**
3- **व्रत रखना भी एक दवाई है।**
4- **परिवार के साथ भोजन करना भी एक दवाई है।**
5- **हंसी-मजाक करना भी एक दवाई है।**
6- **गहरी नींद भी एक दवाई है।**
7- **अपनों के संग वक्त बिताना भी एक दवाई है।**
8- **खुश रहना भी एक दवाई है।**
9- **कुछ मामलों में चुप रहना भी एक दवाई है।**
10-**लोगों का सहयोग करना भी एक दवाई है।**
11-**और एक अच्छा दोस्त तो पूरी की पूरी दवाई की दुकान है।**

जीवन एक क्रिकेट है....

समय- बोलिंग कर रहा है।
शरीर- बल्लेबाज है।
धर्मराज-अम्पायर है।
बीमारियां- फील्डिंग कर रही है।
यमराज- विकेट कीपर है और
प्राण- विकेट है।

इस डे-नाईट के मैच में हमें रचनात्मक के जलवे दिखाना है, सांसों के सीमित ओवर में, सर्जन के रन बनाना है, एल.बी.डब्ल्यू. यानि हार्ट-अटैक, दुर्घटना में मरना-रन आउट।

महाविदेह क्षेत्र.... ऊपरी जानकारी...!

✽ मनुष्य लोक में स्थित 15 कर्म भूमि में 5 बड़े क्षेत्र यानी महाविदेह।

✽ जंबुद्वीप में मेरु पर्वत के पूर्व पश्चिम तरफ फैला करीब 1 लाख योजन लंबा, 33684 योजन 4 कला चौड़ा क्षेत्र यानी जंबूद्वीप का एक तिहाई से ज्यादा क्षेत्र में महाविदेह क्षेत्र है।

✽ यह एक शाश्वत कर्म भूमि है । मतलब हमारे अवासर्पिणी काल के चौथे आरे जैसी रचना सदा रहती है। यहां से मनुष्य अपनी आराधना से कभी मोक्ष जा सकता है।

✽ तीर्थंकर आदि श्लाघनीय पुरुष हमेशा विचरण करते हैं। इनका यहां कभी अभाव नहीं होता। (श्लाघनीय पुरुष ना हो ऐसा समय नहीं आता।)

✽ महाविदेह क्षेत्र में बहती 2 बड़ी नदियों सीता तथा सितोदा और मध्य में स्थित मेरु पर्वत की रचना से महाविदेह क्षेत्र के 4 विभाग हो जाते है । पूर्व उत्तरी, पूर्व दक्षिणी, पश्चिम उत्तरी, पश्चिम दक्षिणी महाविदेह। इन 4 विभागों में पुनः आंतर नदियां तथा वक्षकार पर्वतों की रचना से 8-8 भाग हो जाते है। यानी एक महाविदेह के 8-X-8=32 भाग है। इन भागों को हम 32 विजय के नाम से जानते है।

✽ एक एक विजय हमारे भरत क्षेत्र से काफी बड़ी है।

✽ महाविदेह के बीचों बीच मेरु पर्वत है जिसके आसपास के जमीनी हिस्सों में भद्रशाल नामक अत्यंत रमनिय वन है। जहां देवता आदि भ्रमण करते हैं। इसका सुंदर वर्णन आगमों में है। इसी मेरु पर्वत के ऊपर पन्डग नामक वन में 64 इंद्र नवजात तीर्थकर प्रभु को ले जाकर जन्मोत्सव व अभिषेक करते हैं।

✽ इन 32 विजय में से कम से कम किन्हीं 4 विजय में प्रभुजी हर समय होंगे। इसी तरह 4 चक्रवर्ती, 4 वासुदेव आदि होते ही है। यह संख्या ज्यादा भी हो सकती है। यानि ज्यादा से ज्यादा 32 विजय में से 32 प्रभुजी, (28 चक्रवर्ती या 28 वासुदेव आदि भी उत्कृष्ट हो सकते है, 1 विजय में चक्रवर्ती तथा वासुदेव एक साथ नहीं होते।)

✽ महाविदेह के मनुष्यों की अवगाहना 500 धनुष्य तथा उत्कृष्ट आयुष्य देश न्यून करोड़ पूर्व तक की हो सकती है। मनुष्यों में छहों संस्थान, छहों संहनन में से हो सकते हैं। काल कर के कर्म अनुसार 7 वीं नरक या अनुत्तर विमान, मोक्ष आदि तक जा सकता है। मतलब यहां से सब गति सब स्थान के द्वार खुले रहते है (जैसे हमारे लिए अभी मोक्ष द्वार बन्ध है। यह एक दृष्टांत है।)

✽ 1-1 विजय में गंगा सिंधु जैसी नदियां, वैताध्य पर्वत, 6 खण्ड, रुषभकूट पर्वत आदि की रचना हमारे भरत क्षेत्र जैसी ही होती है। फर्क सिर्फ विस्तार में बड़े होते हैं विजय का पिक देखें।

✽ वर्तमान में जंबूद्वीप महाविदेह मे 4 तीर्थंकर प्रभु सीमंधर स्वामी, युगन्धर स्वामी, बाहु स्वामी और सुबाहु स्वामी विचरण कर रहे हैं।

✽ महाविदेह क्षेत्र में मेरु के समीप 2 युगलिक क्षेत्र है। देव कुरु उत्तर कुरु। मध्य में ही 4 गजदंत पर्वत, 200 काँचनक पर्वत, 10 बड़े द्रह,यमक शमक 4 बड़े पर्वत आदि स्थित है। इन्हीं युगलिक क्षेत्र में स्थित जंबू वृक्ष पर जंबूदीप का आधिपति अनादृत नामक देव रहता है। यह सब वर्णन युगलिक क्षेत्र के वर्णन में आएगा।

✽ जैसे हमने जंबूद्वीप के महाविदेह का ऊपरी वर्णन देखा वेसे ही घातकीखण्ड में 2, पुष्करार्ध द्वीप में 2 महाविदेह ऐसे ही सभी लक्षण वाला है। फर्क मात्र विशालता व आकार में थोड़ा अलग है बस। बाकी तीर्थंकर आदि, नदिया, पर्वत, युगलिक क्षेत्र आदि सब लक्षण समान है। मध्यलोक में कुल 5 महाविदेह है।

✽ अन्य महाविदेह से जंबूद्वीप की एक अलग विशेषताः- जंबूद्वीप महाविदेह के 2 विजय अधोलोक तक झुकी हुई है। मतलब इन 2 विजय की अपेक्षा अधोलोक में भी मनुष्य, तीर्थंकर आदि श्लाघनीय पुरुष होते है यह समझना। ऐसा अन्य 4 महाविदेह में नहीं हुई है।

✽ सीता व सितोदा बहुत 2 विशाल नदिया है। जो मूल में 50 योजन चौड़ी है तो लवण समुद्र से मिलते समय 10 गुना चौड़ी हो जाती है। इस एक एक नदी में रास्ते में 5,32,000 अन्य नदियां मिलती है।

✽ महाविदेह क्षेत्र के पूर्व पश्चिम में 2 सुंदर वन है। सितामुख वन और सितोदा मुख वन।

✽ आज तक जो पढ़ा समझा उस आधार पर वर्णन किया। अनजाने में ही जिनवाणी विपरीत अंशमात्र लिखा हो तो मिच्छामि दुक्कड़म्।

फागण की फेरी क्यों ?

फागण की फेरी क्यों ? कितने सालों से चली आ रही है ? छः गांव की यात्रा में कौन से स्थल आते है। यानी मंदिर। भगवान नेमिनाथ के समय हुए। कृष्ण महाराजा के पुत्रों में शाम्ब और प्रध्युमन नाम के दो पुत्र थे, भगवान नेमिनाथ की पावन वाणी सुनकर शाम्ब-प्रध्युमनजी को वैराग्य हुआ। भगवान के पास दीक्षा लेकर भगवान आज्ञा लेकर शत्रुंजय गिरिराज ऊपर तपस्या और ध्यान करने लगे। अपने सभी कर्मो से मुक्त होकर.... फागण सुदी-तेरस के दिन शत्रुंजय गिरिराज का भाडवा के डुंगर ऊपर से मोक्ष-मुक्ति पाये थे। उन्हीं के दर्शन करने के लिए लगभग 84 हजार वर्षो से यह फागण के फेरी चल रही है। फागण के फेरी में आते हुए दर्शन के स्थल.... दादा के दरबार में से निकलने के बाद रामपोल दरवाजे छः गांव की यात्रा प्रारंभ होती है, उसमें 5 दर्शन के स्थल है।

1-6 गांव की यात्रा प्रारंभ होते ही 100 पगथिया के बाद ही देवकी माता के 6 पुत्र का समाधि मंदिर आता है वो यहां मोक्ष गये थे। (कृष्ण महाराज के 6 भाई का मंदिर)।

2- उलखा जल नाम का स्थल आता है। (जहां दादा का पक्षाल आता है ऐसा कहते है वो स्थल) यहां पर आदिनाथ भगवान के पगले है।

3- चंदन तलावड़ी आती है यहां पर अजितनाथ और शांतिनाथ के पगले है। चैत्यवंदन में अजितशांति बोलते है और चंदन तलावड़ी पर नो लोगस्स का काउस्सग करते है। अगर लोगस्स नहीं आता तो 36 नवकार मंत्र का जाप करने का।

4- भाडवा का डुंगर पर शाम्ब प्रध्युमन की देरी यानी मंदिर आता है। इसी के दर्शन का महत्व है। आज के दिन यहां मंदिर में पगले हैं। यहां चैत्यवंदन करने का होता है।

5- सिद्ध वड का मंदिर यह मंदिर (पालके अंदर ही है) यहां पर आदिनाथ भगवान का मंदिर है। यह पांचों स्थल पर चैत्यवंदन करना होता है और जयतलेटी-शांतिनाथ। रायण पगला- आदिनाथ दादा-पुंडरीक स्वामी यह भी पांच स्थल पर चैत्यवंदन करने का होता ही है। यात्रा करो तो विधि विधान के साथ। हम फागुनी तेरस करने जाते है लेकिन हमें इस इतिहास की जानकारी नहीं है कि फागुनी तेरस क्यों की जाती है। आप भी जाने और अपने साथियों को भी बताएः-

श्री शत्रुंजय शाश्वत तीर्थ-फागुन फेरी अर्थात् प्रदक्षिणा.... फागुन सुदी-13

फागुण सुदी-13 के दिन श्री शत्रुंजय महातीर्थ पर श्री कृष्ण महाराज के पुत्र शाम्ब-पर्द्धमन् साढ़ेआठ करोड़मुनिवरों के साथ सिद्ध गति को प्राप्त हुए थे, इसी अनुपम प्रेरणा से हर वर्ष जिनधर्मानुरागी शाश्वत तीर्थ की 108 प्रदक्षिणा देकर सिद्धभूमि का वंदन करते हैं।

अनंत सिद्ध नो ए ठाम, सकल तीर्थ नो राय....
अनंत आस्थाओं के आयाम, शाश्वत गिरिराज,
भव तारक श्री शत्रुंजय महातीर्थ....
जहां अनंत आत्माओं के कर्म मालिन्द नष्ट
हो जाते है....
ऐसे प्रकट प्रभावी श्री सिद्धगिरिराज जहां....
अनेकानेक आत्माओं ने सिद्धत्व को प्राप्त किया....

ऐसे श्री अजरामर शाश्वत तीर्थ की यात्रा का अवसर पूर्व के कई भवों के पुण्य का प्रभाव है....

हम बड़े पुण्यशाली है जिन्हें अनंत जीवयोनियों के महासागर को पार करने के पश्चात् मानव भव प्राप्त हुआ है, वह भी जिनेश्वर परम्परा में....

हमारे जीवन का स्वर्णिम अहोभाग्य है, जहां दादा आदिनाथ प्रभु ने पूर्व नव्वाणु बार (असंख्य बार) यात्रा की, जिस तीर्थ की यात्रा अरिहंतों, अनंत सिद्धों, अनंत गुरु भगवंतों अनंत पुण्य आत्माओं ने कर आत्मकल्याण किया, जिस भूमि के स्पर्श ने अनंत आत्माओं को बोध दिया....

यही तीर्थ हमें विरासत में मिला है.... चालो सिद्धगिरि राज, मले मुक्ति नी पाज, गिरी सिद्ध अनंत नो ठाम छे।

❊ लोकदृष्टिऔर ज्ञानी की दृष्टिमें पश्चिम-पूर्व जितना अंतर है। ज्ञानी की दृष्टि प्रथम तो निरालंबन होती है वह रुचि को उत्पन्न नहीं करती और जीव की प्रकृति से मिलती नहीं आती, इसलिए जीव उस दृष्टिमें रुचिवाला नहीं होता परन्तु जिन जीवों ने परिषह को सहन करके थोड़े समय तक भी उस दृष्टिका आराधन किया है उन्होंने सर्व दुःखों के क्षयरुप निर्वाण को पाया है- उसका उपाय पाया है।

सुनते है दया गुरू की रोज बरसती है।
एक बून्द जो मिल जाये, तकदीर बदलती है।।

*** डॉ. सुभाष जैन**

भारत के भाग्य के अलिखित विधान के निर्माता, जीव जगत की परख तथा हृदय के करूणामय वात्सल्य से समाज को नया विश्वास, नई प्रेरणा, सवंल्य आदर्श प्रदान कर जीवन को सुन्दर बनाने वाले **पूज्यपाद गुरूदेव श्री नवरत्नसागरजी महाराजा** भक्तों के हृदय में निवास करते है। गिरते मानव जीवन मूल्यों के प्रति तथा सांस्कृतिक क्षरण से चिंतित रहने वाले गुरूदेव अक्सर इस बारे में बात नहीं करते थे परन्तु वे इन सब बातों को भलीभांति जानते हैं, बात नहीं करने का कारण भी महत्वपूर्ण है। और वह यह है कि इन प्रपंचपूर्ण चर्चाओं से किसी के प्रति भी कोई अच्छी-बुरी बात मुंह से नहीं निकले किसी के प्रति कुछ बात कहने सुनने पर, सबसे पहले हमारे मन को खराब करना है, इसलिये पूज्यश्री अक्सर तटस्थ भाव से हल्की मुस्कान से अपनी अभिव्यक्ति प्रदान कर देते थे। पूज्यश्री की साधना परमात्मा की तरह निष्काम आराधना और तप जप शक्ति के द्वारा संसारी प्राणियों को दु:खों की दावाग्नि से निकाल सुखों के सागर तक पहुंचाने व सुधारने हेतु सतत प्रयासरत रहे है वे हमारे दग्ध मन को शीतलता प्रदान करने, समता का जल पिला रहे है। पूज्यश्री की करूणामयी आँखों में विश्व वेदना छुपी हुई थी, वे दयामयी अहिंसा को विभिन्न तरीके से अपने जीवन में अपनाने का मार्गदर्शन, प्रेरणा, उपदेश, प्रदान कर विश्व को हिंसा, हत्या, बर्बरता से बचाने का अभय प्रदान करते रहे हैं।

मानव के सच्चे प्रहरी पूज्यश्री एक ऐसे कालजपी संत थे जो इस वय में भी पैदल विहारी होने के साथ 187 वीं ओली के आराधक रहे है, यही नहीं आपश्री ने कभी भी अपने जीवन में दो समय आहार का उपयोग नहीं किया है। अरे! वर्ष में अधिकांश दिन तो वे आहार ग्रहण ही नहीं करते है। मैं यह कह सकता हूं कि वे अपनी सांसो की सामिधा से साधना के ऊंचे महल बनाते रहे है। यही नहीं पूज्यश्री अपने रक्त की एक-एक बूंद से मानवता की क्यारियों सींच कर संस्कारों, धर्म, साधना के फूल खिलाकर वास्तव में आध्यात्मिक युग का सर्जन करते रहे है।

बेशक! हमें इस बात का गौरव और अभिमान है कि- पूज्य गुरूदेव का जन्म इस युग में हुआ और हमने भी इस युग में जन्म लेकर गुरूदेव का सानिध्य पाया यह निश्चित है कि अगर हम गुरूदेव के सम्पर्क में नहीं आते तो हमारे जीवन की कहानी कुछ और ही होती, हम क्या बनना चाहते है और क्या बन जाते हैं। आज पूज्यश्री के सम्पर्क में आने के बाद यह तो निश्चित है हम वह तो नहीं बने जो गुरूदेव के सम्पर्क में आकर नहीं बनते वे हमारे जीवन निर्माता है। हमें इस बात का भी गर्व है कि आज जैन समाज के पास एक ऐसा पुण्यात्मा संत था जो आध्यात्म में निपुण एवं सामाजिक उत्थान का प्रेरणा स्त्रोत रहा है। आज ऐसा कौन सा व्यक्ति ऐसा है जो एकबार गुरूदेव के आभा मंडल में आने के बाद उनका मुरीद नहीं हो गया है, फिर चाहे वह कोई भी जाति या स्तर का क्यों न हो। वे प्रवचन में और अपने निकट बैठने वाले को अपनी वाणी की अमृत धारा से जब स्नान कराते थे तो व्यक्ति के मन के विकार घुल जाते है। एक बार उनके सम्पर्क में आया व्यक्ति पूज्यश्री को कभी भी भूल नही पाया।

आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा ऐसे आध्यात्म शिल्पी रहे है जिनका शिष्य परिवार जहां भी जाता है वहां धार्मिक आस्था का ज्वार पैदा कर देता हैं। एक माँ जब जन्म देती है तो वह संसार दिखलाती है और जब गुरू जन्म देता है तो वह संसार से पार करा देता है, माँ थपकी देकर सुलाती है तो गुरू झपकी देकर सोये हुए को उठा देते है, गुरू जीवन को सार्थक कर देते है, गुरू का हाथ सर पर रहे तो अनिष्ट से अभय की तसल्ली दिल को होती है, लेखनी से लिखे शास्त्रों को तो समझने की बुद्धि चाहिये लेकिन गुरू तो अंगुली पकड़कर इस जीवन से भी मुक्ति दिलाकर मोक्ष का मार्ग बताते हैं।

हम कई बार बे लगाम होकर बिगड़ी पतंग से उड़ते-रहते है और यह समझते हैं कि सम्पूर्ण आकाश पर मेरा ही अधिकार है, पर जब अपने कर्मों से पतंग जमीन पर आती है तो हमें अहसास होता है कि बिना डोर के पतंग का कोई अस्तित्व नहीं है, यहीं जिन्दगी में गुरू के नहीं होने का अहसास होता है। हमारे जीवन की डोर अगर **आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा** जैसे गुरू के हाथों में होगी तो पतंग हमेशा ऊँचे आकाश में उड़ती रहेगी। कई गुरूभक्तों की डोर थामे आज भी गुरूदेव उनका जीवन संवारने का काम कर रहे हैं। गुरू चरणों में आने के बाद जीवन सुरक्षित हो जाता है यह अनुभव गुरूदेव के जाने के बाद आज भी होता है।

सही मार्ग पर ले जाना वाला मार्गदर्शक

✻ पंन्यास प्रद्युम्न विजयगणि

आज के समस्या पढ़े लिखे विवेकशील आदमी की मानसिक स्थिति ऐसी हो गई है कि विचारहीन, दिशाहीन एवं उद्देश्यहीन बहते तेज प्रवाह में (समय में) तैरना नहीं चाहता है, उसके साथ चलना नहीं चाहता है, उसकी सोने की, उसमें सम्मिलित होने की तीव्र इच्छा शक्ति है परन्तु उसमें ताकत नहीं है, उसकी शक्ति भी नहीं है वह निरपेक्ष (तटस्थ) रहना चाहता है परन्तु प्रवाह इतना तेज है कि ऐसा व्यक्ति भी उसके प्रभाव में आ जाता है और बह जाता है। किनारे पर खड़ा रहनेवाला व्यक्ति उस प्रवाह में बह नहीं सकता है तैर तो नहीं सकता है, परन्तु प्रवाह उसे गिला तो कर ही देगा वह उसके प्रभाव से अपने को बचा नहीं पायेगा। संयोग से इस छोटी सी पुस्तक में जो विचार व्यक्त किये गये है, उससे पढ़नेवाला निश्चित ही प्रभावित होगा।

अत्यधिक चिंतन मनन के बाद यह विचार सामने आये है ऐसे विचारों से मोहित एवं आनंदित तो हुआ जा सकता है किन्तु उनसे अंतिम निष्कर्ष, हल को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। एक कवि के शब्दों में:-

अरे ! उच्च शिखर को तो न छू पाऊंगा !
मैं मोहित आनंदित तो हो ही जाऊंगा !!

ऐसी विचारधारा के मार्ग पर चलने का नक्क्षा यहां दिखलाया गया है साथ ही इस मार्ग पर चलने की शक्ति एवं हौंसला रखने की हिम्मत भी बंधाई गई है।

हमारी इस अपिसंस्कृति एवं ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग दिखाने वाले विचारों को गंगौत्री का दर्शन राजकोट के श्री प्रभुदास भाई ने दिखलाई। (श्री प्रभुदास भाई का जीवन योगीराज श्री आनंदछनजी जैसा था) पर इस अकेले रास्ते पर चलने वाले की योजना सफल होगी ? यह नहीं लगता है। उस व्यक्ति के विचारों को समझा तो जा सकता है परन्तु उस मार्ग पर चलना अत्यन्त कठिन है।

चाहे रास्ता कैसा ही छोटा-बड़ा ही और उस पर कांटे कंकर न भी हो तथा एक छोटी अच्छी सी बाड़ बनी हो उस पर हमें गलत रास्ते का त्याग का सही मार्ग पर आगे की ओर बढ़ना है। आज की यह भौतिकवादी विचारों की हवा समझदार विवेकवान व्यक्ति को भी मार्ग से विचलित कर देती है। उसे कमजोर बना देती है। जैसे-जैसे यहां हंडा अवसर्पिणीकाल आगे आगे बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे धार्मिक व्यक्ति की धर्ममिष्टबने रहने के लिये इस प्रकार के विचार प्रवाह का सामना (मुकाबला) करना पड़ रहा है, कोई नई बात जब हमारे सामने आती है तो हम उसे स्वीकार करते है, अपनाते है और उस पर सोच समझ कर विचार भी करते है नहीं तो अच्छी वस्तुओं के नीचे सड़ी-गली वस्तु आ जाती है और लेने के देने पड़ जाते है। ऐसा न हो यह सोच समझकर ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिये ? इस प्रश्न का उत्तर पुस्तक में मिलता है, जिसे सुगम सरल भाषा शैली में सही तरीके से समझाया गया है।

आज चारों ओर जो विचार प्रवाहित हो रहे है उससे अलग हटकर संवाद सुनने को यहां मिलता है, छोटे-बड़े स्थूल और सूक्ष्म धार्मिक, राष्ट्रीय एवं जातियों से संबंधित प्रश्नों के विचारों से आत्मसात कराने का प्रयास किया गया है। श्रद्धा की गइराई और ज्ञान के उच्च शिखर का सरल सुगम समन्वय यहां दिखाई देता है। अगर आप इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गये विचारों से सहमत नहीं हो तो पूर्वाग्रह से मुक्त होकर इसका पठन करें एवं जल्दबाजी में कोई धारणा का अभिप्राय मत बना लेना, इसमें सत्य छुपा है। यह भावना रखकर आप इसके लेखी को पढ़ेंगे से विचारों को नया मार्गदर्शन एवं नया प्रतिफल प्राप्त होगा। इन आलेखों के लेखक श्री अतुलभाई (वर्तमान में मुनिश्री हितावविजयजी महाराज) जन्म से ही सामद्ध और श्रीमती होते हुए भी संयम जीवन जीते थे इसलिये उनके लिये गर्भ और गर्भश्राद्ध शब्द का उपयोग किया जा सकता है। शास्त्र जैसा कहते है, उनका जन्म इसी कार्य के लिये न भी हुआ हो तो वह गलत रास्ते पर चलनेवालों को रोककर एक मार्गदर्शक व्यक्ति बनकर, प्रेम से, उनके साथ संवाद करते है और क्रोधित हुए बगैर उनकी और प्रेमभरा हाथ बढ़ाकर उन्हें भूतकाल की बात (घटना) पर विचार न करने एवं वर्तमान में सही रास्ते पर चलने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। हमें अच्छे बुरे संवाद सुनना, सुनकर, रुककर उचित स्थान पर पहुंचने के लिये सही मार्ग पर हिम्मत के साथ आगे बढ़ना है। चलते-चलते श्री मकरंद दवे की इन पंक्तियों को अपने हृदय में ओठों पर लाना है।

''मन मेरे जहां सब लोग दौड़ रहे है वहां तू अकेला रुक जा। रुकने से तेरा कुछ नहीं खीरेगा। खीया हुआ तुझे वापस मिल जायेगा।'' ऐसे सुन्दर विचार को अच्छी और बुरी नजर से देखनेवाले प्राणियों को यदि अच्छा नहीं लगेगा तो उससे तुझे क्या ?

पढ़ने वाले निरपेक्ष भाव से, विवेक से देखें तथा इसमें बतलाये गये विचारों का आदर सम्मान करें और खराब विचारों का दूषित विचारों का त्याग करें। उन्हें छोड़े लेखक की लेखनी में वे सद्धर्म के लिये प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम अनुराग करने की ध्वनि सुनाई देती है। वह ध्वनि हमारी भी बने इसी अपेक्षा और विश्वास के साथ... !

॥ नवरत्न का नाम आवेगा ॥

देखा है हमने नवरत्न को
हमने नहीं देखा ईश्वर को,
चंद्र, जिसमें समा गया,
हमने देखा है उस सागर को,
मोक्ष महल का वासी वो
इस धरा पर यायावर है
हमारी श्रद्धा, मेरे विश्वास
का नाम नवरत्नसागर है!!
मेरा मान हो तुम सम्मान हो तुम
शब्द तुम, मेरी आवाज ही तुम
अहसास तुम हो आभास भी तुम्हीं
मेरे अरमानों का आकाश भी तुम
इस युग का सौभाग्य है कि
गुरूवर इसमें जन्में
हमारा यह भाग्य की गुरूवर के
युग में हम जन्में
कलयुग में भी सतयुग गुरूवर से
जाना जावेगा।
कभी महावीर की श्रेणी में गुरूवर
का नाम आयेगा।
जब तक सबके अघरों पर करूणा
का पैगाम आयेगा।
तब-तब हम सबके मुख पर नवरत्न
का नाम आवेगा।

पूजा सम्बन्धी उपयोग

1- फण को प्रभु का शिखा रुप अंग समझकर शिखा पूजा के साथ ही अनामिका अंगुली से पूजा करना उचित है और न करें तो भी दोष नहीं है।

2- लंछन एवं अष्ट मंगल की पूजा नहीं करना।

3-परमात्मा के परिकर में रहे हुए देवी देवता की भी पूजा न करें।

4- सिद्धिचक्रजी की पूजा के बाद भी अरिहंत की पूजा कर सकते हैं।

5- देवी-देवता अपने साधर्मिक होने से उनको अंगुठे से सिर्फ ललाट पर ही तिलक करें, प्रणाम करें परन्तु वंदन, खमासमण व चैत्यवंदन न करें।

6- मुखकोश गम्भारे के बाहर ही नात तक बांधकर फिर निसीहि बोलकर गंभारे में प्रवेश करना।

7- भाईयों को परमात्मा की पूजा, धोती एवं खेस पहनकर, खेस से ही मुख बांधकर पूजा करनी एवं बहनें कम से कम 15 वर्ष के ऊपर हो जाये तो साड़ी पहनकर सिर ढंककर पूजा करें।

8- पुरुष परमात्मा के दायी (राईट) और स्त्री बायी (लेफ्ट) तरफ खड़े रहकर स्तुति, पूजा, दर्शन वगैरह करें।

9- गंभारे में मौन रहें, दोहे मन में बोले एवं स्तवन, स्तुति अकेले बोले तो धीरे-धीरे मधुर स्वर से बोलें।

10-चैत्यवंदन में स्तवन, स्तुति मध्यम स्वर में बोले, जिनसे दूसरों को अंतराय न हो।

11-प्रभु के विनय हेतु फल-फूल आदि पूजन सामग्री मंदिर में लेकर जाना, खाली हाथ नहीं जाना लेकिन अपने खाने की वस्तु नहीं लेकर जाना।

12- प्रभु को अपने हाथ में बंधी रक्षा पोटली, ब्रासलेट, चूड़ियाँ, खेस, साड़ी जैसी कोई भी वस्तु न छुएं उसका विवेक रखें।

13-प्रभु के साईड में खड़े रहकर पूजा करें, जिससे औरों को दर्शन में अंतराय न हो।

यादों का एक हुजुम मेरे आसपास है।
मैं गुजरे वाकयात का ऐसाहनमंद हूं

गाँठ बांध लें...!

✻ कन्याओं का विवाह 21 वें वर्ष में, और लड़की का विवाह 24 वें वर्ष की आयु तक हर स्थिति में हो जाना चाहिये !

✻ फ्लैट भूलकर मत खरीदना ! जमीन खरीदो, और उस पर स्वतंत्र भवन बनाएं ! अन्यथा आपकी संतानों का भविष्य पिंजरे के पंछी की तरह हो जाएगा !

✻ नयी युवा पीढ़ी को कम से कम तीन संतानों को जन्म देने के लिए प्रेरित करें !

✻ गांव में नाता जोड़कर रखें ! और गांव की पैतृक संपत्ति और वहां के लोगों से नाता, जोड़कर रखें !

✻ अपनी संतानों को अपने धर्म की शिक्षा अवश्य दें और उनके मानसिक व शारीरिक विकास पर अवश्य ध्यान दें !

✻ हिन्दी भाषा (व क्षैत्रीय बोली का भी) अधिक से अधिक प्रयोग करें, और प्रचार-प्रसार करें !

✻ किसी भी जिहादी और आतंकवादी प्रवृत्ति के व्यक्ति से सामान लेन-देन, व्यवहार करने से बचें !

✻ घर में बागवानी करने की आदत डालें, (और यदि पर्याप्त जगह है, तो देशी गाय पालें !)

✻ हर सनातनी के घर वाल्मीकि रामायण, योग वशिष्ठ भागवत गीता-वेद,उपनिषद होने चाहिये, जब होंगे तो पढ़ेंगे भी !

✻ होली, दीपावली, दशहरा, नवरात्रि, मकर संक्रांति जन्माष्टमी, राम नवमी आदि जितने भी हिन्दू त्यौहार आयें उन्हें आफिस/कार्य से छुट्टी लेकर सपरिवार मनाये ! सामूहिक यज्ञ करें !

✻ अपनी संतानों को प्रत्येक वर्ष एक विद्या प्रदान करें ! जैसे संगीत विद्या, योग विद्या, तैराकी, भोजन बनाने की विद्या, खेलकूद और युद्ध विद्या आदि.... यानि अपनी संतानों को सशक्त बनाने में व्यस्त रखें !

✻ वर्ष में कम से कम दो पैदल तीर्थ यात्राएं अवश्य करें।

✻ प्रातःकाल 5 बजे उठ जाएं, और रात्रि को 9 बजे तक सोने का नियम बनाएं !

✻ यदि आपकी कोई संतान पढ़ाई में असक्षम है, तो उसको कोई भी योग्यता (हुनर Skill) वाला ज्ञान जरुर दें !

✻ आपकी प्रत्येक संतान को कम से कम तीन फोन नंबर स्मरण होने चाहिये और आपको भी !

✻ जब भी परिवार व समाज के किसी कार्यक्रम में जाएं तो अपनी संतानों को भी ले जाएं ! इससे उनका मानसिक विकास सशक्त होगा !

✻ परिवार के साथ मिल बैठकर भोजन करने का प्रयास करें और भोजन करते समय मोबाईल फोन और टीवी बन्द कर लें !

✻ अपनी संतानों को बॉलीवुड की कचरा फिल्मों से बचाएं और प्रेरणादायक फिल्में दिखाएं !

✻ जंक फूड और फास्ट फूड से बचें !

✻ सायंकाल के समय 10 मिनट भक्ति संगीत सुने, बजाएं !

✻ दिखावे के चक्कर में पड़कर व्यर्थ का खर्चा न करें !

✻ दो किलोमीटर तक जाना हो, तो पैदल जाएं या साईकिल का प्रयोग करें !

✻ अपनी संतानों के मन में किसी भी प्रकार के नशे (गुटखा, तंबाखू, बीड़ी, सिगरेट, दारु....) के विरुद्ध चेतना उत्पन्न करें, तथा उसे विकसीत करें !

✻ सदैव सात्विक भोजन ग्रहण करें, अपने भोजन का ईश्वर को भोग लगाकर प्रसाद ग्रहण करें ! भोग में तुलसीदल जी को अवश्य सम्मिलित करें !

✻ अपने आंगन में तुलसी का पौधा अवश्य लगायें व नित्य प्रतिदिन पूजा, दीपदान अवश्य करें !

✻ अपने घर पर एक शास्त्र अवश्य रखें और उसे चलाने का निरन्तर हवा में अकेले प्रयास करते रहें ताकि विपत्ति के समय प्रयोग कर सकें ! जैसे लाठी, हॉकी, गुप्ती, तलवार, भाला, त्रिशूल व बंदूक/पिस्तौल लाइसेंस के साथ !

✻ घर में पुत्र का जन्म हो या कन्या का, खुशी बराबरी से मनाएं ! दोनों जरुरी है ! अगर बेटियां नहीं होगी तो परिवार व समाज को आगे बढ़ाने वाली बहुएं कहां से आएगी और बेटे नहीं होंगे तो परिवार समाज व देश की रक्षा कौन करेगा ! परम भक्त माली मोहनलाल मीठाजी सोलंकी माली समाज संपूर्ण एकता राम राम सा, जय लिखमाजी री सा, एक पोस्ट बनाने के लिये दिमाग लगाना पड़ता है, समाज बंधु एक लाइक तो बनता है ताकि मेरा हौंसला आपके लिये दरवाजा खुल रहे...!

लोगस्स का कल्प (मंत्र)

कल्प उसे कहते है, जो इच्छित वस्तु देने में समर्थ है, जैसे कल्पवृक्ष, कल्पसूत्र इत्यादि, लोगस्स का कल्प (मंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं एम् लोगस्स उज्जोअगरे
धम्म तित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं
चउवीसंपिकेवली
मम मनोवांछितं
कुरुं कुरु स्वाहा ॥

विधि:-

1- सफेद वस्त्र (कहीं पर भी कोई डिजाईन ना हो, वर्तमान में लोग ऐसी ऐसी धोती पहनने लग गए है जो दूर से लगभग ''साड़ी'' जैसी ही दिखाती है।)

2- सफेद आसन (कार्नर पर भी डिजाईन न हो।)

3- पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें, (इसलिये ये जप भी सूर्योदय होने लगे, तब ही शुरु किया जाए।)

4- पद्मासन (यदि ये संभव नहीं हो तो सुखासन (पालथी) लगाकर बैठें। (यदि रोज ऑफिस में कुर्सी पर और घर में सोफे पर ही बैठने का होता हो, तब कुछ दिन ''सुखासन'' में बैठने का अभ्यास करें फिर ही मंत्र जप के लिए अपने को तैयार करें।)

5- चौविशी (जिस फोटो में 24 तीर्थकरों की फोटो हो) के सामने दीप और सुगंधित धूप करें।

किसी भी महीने की सुदी एकम (शुक्ल पक्ष) से शुरु करके चौदह (14) दिन में कुल 12500 (125 माला) की संख्या में जाप पूर्ण करें।

मंत्र के अंत में ''मनोवांछित'' की बात कही गयी है, इसलिये इसे मात्र संकट निवारण मंत्र कहना उचित नहीं है, यद्यपि ये संकट का निवारण करता है, इसमें शंका नहीं है।

ये मंत्र 49 अक्षरों का है, शास्त्रों में 7 शरीर की बात कही गयी है। एक शरीर को विकसित होने में 7 साल लगते हैं। (इसलिये जैन दीक्षा 7 वर्ष के बच्चे को ना देकर 8 वर्ष के बच्चे को दी जाती है।) 49 वर्ष पूरे होने पर व्यक्ति ''पक'' जाता है उसे दुनियादारी का ज्ञान हो जाता है ? परन्तु ये शाश्वत सत्य सभी के लिए नहीं है, सामान्य दृष्टिकोण से ये बात कही गयी है। ज्यादातर व्यक्ति जीवन भर तीसरे शरीर तक ही पहुंच पाते है। (इस विषय पर विस्तार से फिर कभी।) कुछ व्यक्ति अल्प समय में ही उच्च अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा इसलिये संभव होता है कि पूर्व जन्म में ''प्राप्त'' होना था, वो ''भटक'' गये थे, इसलिये उस जन्म में प्राप्त ना होकर इस जन्म में प्राप्त होता है। योग साधना भवो-भव साथ चलती है (जिस प्रकार ''कर्म'' चलता है।)

मंत्र जप शुरु करने से पहले इस मंत्र का थोड़ा अभ्यास कर लें ताकि जिस समय जाप में बैठे, तब मन में चंचलता और शरीर में थकावट ना आये।

मंत्र जपने से सबसे पहले एकदम आराम से रोज 3 नवकार गिनें।

फिर मन में अपने गुरु को प्रणाम करें।

फिर मन में अपने इष्ट देव को प्रणाम करें।

(उस समय ऐसा समझें कि वो आपके सामने उपस्थित हो गए हैं।)

सुविधा के लिये:-

✲ पहले दिन : 1 माला गिने।
✲ 2-3 दिन : 3 माला।
✲ 4-5 दिन : 5 माला।
✲ 6-7 दिन : 7 माला।
✲ 8-9 दिन : 9 माला।
✲ 10-11 दिन : 11 माला।
✲ 12 दिन : 15 माला।
✲ 13 दिन : 18 माला।
✲ 14 दिन : 21 माला।
कुल 125 माला।

रोज मन के भावों में उच्चता लाने का प्रयास करें, कहने का मतलब है, जो ''आनंद'' पहले दिन आया हो जप करने में, वो दूसरे दिन उससे अधिक आना चाहिये। यदि ऐसा कर पाये, तो मंत्र सिद्धि भी शीघ्र और ज्यादा प्रभावशाली होगी।

जप पूरे होने पर देव दर्शन, गुरु वंदन, संघ पूजा, प्रसाद बांटना और साधर्मिक भक्ति करें। यथाशक्ति जीव दया के लिये भी कार्य करें। इससे मन में विश्वास और आनंद आएगा कि साधना सफल हुई है।

✲ दृष्टि विष के चले जाने पर कोई भी शास्त्र, कोई भी अक्षर, कोई भी कथन, कोई भी वचन, कोई भी स्थान प्राय: अहित का कारण नहीं होता।

गुरु महाराज की तैंतीस आशातनाएं ?

1- गुरु महाराज के आगे चलना।
2- गुरु महाराज के आगे खड़ा रहना।
3- गुरु महाराज के आगे बैठना।
4- गुरु महाराज के बराबर चलना।
5- गुरु महाराज के बराबर खड़े रहना।
6- गुरु महाराज के बराबर बैठना।
7- गुरु महाराज के बहुत नजदीक बैठना।
8- गुरु महाराज के सटकर चलना।
9- गुरु महाराज के बहुत नजदीक खड़े रहना।
10-गुरु महाराज से पहले भोजन के समय आचमन करना।
11-गुरु महाराज के साथ-साथ बाहर से आने पर गुरु महाराज से पहले इर्यापथिकी रुप प्रतिक्रमण करना।
12-रात्रि संथारा करने के बाद गुरु महाराज बुलावे, तब सुनने पर भी उत्तर न देना।
13-गुरु महाराज के पास आये श्रावक को अपना रागी बनाने के लिये गुरु महाराज से पहले अपने पास बुलाना।
14-लायी हुई गौचरी की किसी दूसरे के पास आलोचना करने के बाद गुरु महाराज के पास आलोचना करना।
15-अन्न आदि लाकर गुरु महाराज से पहले अन्य साधुओं को दिखाना।
16-गौचरी आदि में गुरु महाराज के पहले अन्य साधुओं को आमंत्रित करना।
17-गुरु महाराज से पूछे बिना दूसरे साधुओं को उनकी इच्छानुसार अशनादि देना।
18-गुरु महाराज के साथ आहार करते समय स्वयं अच्छा आहार लेना।
19-गुरु महाराज के बुलाने पर भी जवाब नहीं देना।
20- गुरु महाराज के बुलाने पर आसन पर बैठे-बैठे उत्तर देना।
21-गुरु महाराज के बुलाने पर अविनीत शब्द बोलना।
22-गुरु महाराज के बुलाने पर कटु वचन बोलना।
23-गुरु महाराज के द्वारा कोई काम कहने पर उनको स्वयं को करने का कहना।
24-गुरु महाराज को ''तू'' कहकर बुलाना।
25-गुरु महाराज के भक्त को देखकर या उनकी धर्म कथा सुनकर हर्षित न होना।
26-गुरु महाराज प्रवचन दे रहे हो, तब ''तुम भूल गये हो'' ऐसा कहना।
27-गुरु महाराज के प्रवचन में उनकी बात काटकर बीच में बोलना।
28-गुरु महाराज की पर्षदा बैठी हो, तब गुरु महाराज के प्रवचन की बात को विस्तार से बार-बार बताना।
29-गुरु महाराज के संस्तारक को पांव लग जाने पर ''मिच्छामि दुक्कडं'' न कहना।
30-गुरु महाराज व्याख्यान दे रहे हो, तब बीच में भिक्षा आदि का समय बताकर पर्षदा भंग करना।
31-गुरु महाराज से अधिक मूल्यवान वस्त्र आदि उपयोग में लेना।
32- गुरु महाराज के समान आदि रखना और उस पर बैठना।
33-गुरु महाराज के संस्तारक, आसन आदि पर बैठना और उनका असभ्यता से स्पर्श करना।

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)

खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं.:- 06800200001425 IFSC Code:- IOBA0000680

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

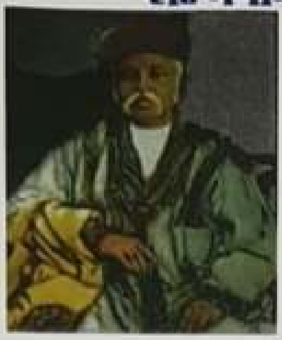

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है । ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है । जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है ।

हमारे आंगन में आनेवाले बेजुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है । ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है ।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है । अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री । सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है । जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है ।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है ।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे ।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है ।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये ।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा ।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था,
उस समय में कुल २५९३ जीवो को छुडवाया गया है ।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है । जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है ।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 0012010000 1219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है ।

दान अेज सफल जीवन

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

नलीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

वर्ग पहेली क्रमांक-346

✽ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1		2	■	3	4		5	
	■	6		■		■		■
7			■	8		9	■	■
	■	■	10		■	11		12
	■	■	13		14		■	
15		16	■	17		■	■	
■	■	18	19		■	20		
■	21	■		■	22		■	
23					■	24		

बाएं से दाएं:-

1- जग मां तीर्थ दो बड़ा शत्रुंजय गिरनार, एक गढ़ ऋषभ समोसर्या एक गढ़ नेम--- (3)

3- दुष्ट राजा गर्दभिल्ल के जुल्मों से प्रजा को मुक्ति दिलाने वाले आचार्य--- (5)

6- एक प्रकार का रत्न--- राज (2)

7- यहां चार्तुमास हेतु बिराजे जगतगुरु हीरविजय सूरि को अकबर ने फतेहपुर सिकरी आने का निमंत्रण भेजा था (3)

8- दादा तारी मुख मुद्रा ने अमीय नजरे निहाली रह्यो, तारा नयनों मां थी झरतु दिव्य तेज हुं झीली रह्यो, क्षणभर आ संसार नी माया तारी भक्तिमां भूलीगयो, तुझ मूर्ति मां मस्त बनीने आत्मिक आनंद--- ह्यो (2,1)

10- जालोर जिले में 52 जिनालययुक्त भ. महावीर का नवीन तीर्थ---वपुर (2)

11- अहिंसा--- धर्म (3)

13- जैन धर्म में वर्णित चार गतियों में से एक--- (2,2)

15- माता त्रिशला रानी के देखे चौदह स्वप्नों में से अंतिम स्वप्न--- अग्नि (3)

17- मैदान का पर्याय प्रां--- (2)

18- आबू पर्वत पर देलवाड़ा के निकट तीर्थ अच--- (3)

20- राजा श्रेणिक यहां के राजा थे--- (3)

22- आठवें तीर्थंकर प्रभु के पिता का नाम---सेनजी (2)

23- पालनपुर में जन्मे, अकबर को प्रतिबोध देने वाले (5)

24- वंदे--- (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-345 का परिणाम

वि	म	ल	■	अ	म	रा	व	ती
ज	■	व	र्ध	मा	न	■	■	र्थं
य	पु	र	■	व	■	वे	य	क
से	रि	■	शा	स	न	■	दे	र
■	म	य	क्ति	■	ग	दे	व	■
स	ता	■	ना	पु	र	■	सू	क्ष्म
क	ल	श	■	जा	■	का	रि	णी
ड़ा	■	■	ल	क	म	ल	■	ती
ल	ध्व	ज	गि	री	■	अ	न	र्थ

ऊपर से नीचे:-

1- थूक गिरे हुए चावल खाते हुए जो केवलज्ञानी हुए--- (4,2)

2- बालु व गोबर से निर्मित अंतरिक्ष पार्श्वनाथ यहां बिराजे है शि--- (3)

4- आलीराजपुर के निकट स्थित भ. पद्मप्रभुस्वामी का तीर्थ--- (3)

5- जैन धर्म के अनुसार गति के--- प्रकार है (2)

8- धार जिले में स्थित ऐतिहासिक स्थल यहां सुपार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ है--- (5)

9- मेरु शिखर न्हवरावे ओ सु--- मेरु शिखर न्हवरावे (3)

10- सोलह सतियों में से एक है प्र--- वी (2)

12- दर्शनम देव देवस्य, दर्शनम पापनाशनम दर्शनम स्वर्ग सोपानम, दर्शनम--- (2,4)

14- इंद्रभूति गौतम भ.महावीर के प्रथम--- धर थे (2)

16- बलसाणा तीर्थ के मूलनायक है श्री वि--- नाथ भगवान (2)

19- इलाहाबाद का नया नाम है प्रया--- (3)

20- नन्दीवर्धन के अनुज तीर्थंकर--- र (3)

21- साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय, --- सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-346

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न-निम्नलिखित शिष्य के गुरु कौन थे ?

1-पुंडरिक स्वामी, 2- गौतम स्वामी, 3- जंबु स्वामी, 4- विक्रमादित्य राजा, 5- आम राजा, 6- ललीग श्रावक, 7- वस्तुपाल/तेजपाल, 8- कुमारपाल, 9- पेथड़शा, 10-अकबर, 11- सैलाना नरेश।

(संसार का सुख=गटर का सुख)

जं लहइ वीयराओ सुक्खं
तं मुणइ सुच्चिय न अण्णो।
न हि गत्तासूअरओ
जाणइ सुरलोइ अं सुक्ख॥

वीतरागी आत्मा के आंतरिक सुख को केवल वीतराग ही जान सकते है, और कोई नहीं। क्या नाली का सुवर देवलोक के सुखों को कभी समझ सकता है भला ? ✻ इन्द्रियपराज

✻ पथ का पथिक पथ भूलकर परिभ्रमण कर रहा हो, भयानक वन में/अरण्य में, चोरों ने लूट लिया हो, नंगे बदन हो, क्षुधा-प्यास से व्याकुल हो, ऐसे समय में उसे दैवी भोजन, शीतल जल एवं वस्त्राभरण की प्राप्ति भाग्य योग हो जाये तो उसे कितनी आनंदानुभूति होगी उससे कई गुना अधिक जिनबिंब एवं जिनागाम की प्राप्ति से जिन आत्माओं को आनंदानुभूति होती हो, वे ही आत्माएं सफलता की सीढ़ियां चढ सकते है।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

वर्ग पहेली क्रमांक-345 के परिणाम

विजेताः-

1- चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- सुधा लोढ़ा, उज्जैन - (म.प्र.) - द्वितीय
3- भारती जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थेः-

प्रभा जैन, देवास

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-344 के परिणाम

सही उत्तर-

1- रात्रि भोजन, 2- 500 योजन, 3- नव लाख, 4- अंडगोलिक मनुष्य, 5- चौथी, 6- पुष्पचुला, 7- रत्नप्रभा, 8- तीन, 9- 10,000 वर्ष, 10- 6, 11- 500, 12- नपुंसक।

विजेताः-

1- चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.) - प्रथम
2- प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - द्वितीय
3-भारती जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

✻ इस जगत में प्राणी मात्र की व्यक्त या अव्यक्त इच्छा भी यही होती है कि मुझे किसी तरह दुःख न हो और सर्वथा सुख हो। प्रयत्न भी इसी के लिए है फिर भी वह दुःख क्यों नहीं मिटता ?

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-3-2024 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

मालवा से लेकर श्री सम्मेद शिखरजी महातीर्थ तक युवा जैनाचार्यश्री की जिनशासन की प्रभावना का जलवा बिखरा

मध्यप्रदेश के बाद श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ में प्रतिष्ठा और चैत्र नवपद ओली आराधना का मेला लगेगा

✻ मालवा में अंजन प्रतिष्ठा के साथ श्री वीर प्रभु के श्रमण समुदाय को वृद्धिवान बनाकर विश्वरत्न नाम को सार्थक किया। सागर समुदाय को दीर्घकाल तक के लिये समर्थ बनाया। अल्प समय में चार बाल मुनियों की भगवती प्रवज्या का संयोग बना नवरत्न गुरुकुल को श्रमण से समर्थ किया।

✻ श्री शिखरजी में अप्रेल का महिना यादगार बनेगा, प्रतिष्ठा महोत्सव 4 अप्रेल से होगा, 20 अप्रेल को ऐतिहासिक वरघोड़ा तथा भोमियाजी का हवन, 21 अप्रेल को ध्वजदण्ड कलश की प्रतिष्ठा होगी। ✻ जयपुर चार्तुमास लगभग तय है, तिथि व घोषणा का इंतजार है।

संयम से मुनि सिद्ध ऋषिसागरजी म.सा.	दिव्यांश से मुनिश्री दिवर्धिसागरजी म.सा.	400 वर्षो बाद प्रतिष्ठा महोत्सव
सम्मेद शिखर भोमियाजी प्रतिष्ठा 21अप्रेंल 2024	सामूहिक श्री सिद्धचक्र महापूजन	श्री पार्श्व भोमियाजी महापूजन
चार्तुमास जयपुर ही होगा	सोने में सुवागा पूज्यश्री का 52 वां जन्मोत्सव सम्मेद शिखर में 21 अप्रेल को मनेगा	सम्मेद शिखर चैत्र ओली 15 अप्रेल से 23 अप्रेंल 24

उज्जैन- जिन शासन की अद्भूत भक्ति के साथ गुरुदेवश्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा की पाट परम्परा को उज्जवलता प्रदान करने का कार्य जो कार्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के द्वारा संयम जीवन में किया जा रहा है वह उसकी तुलना में करना आसान नहीं और न ही शब्दों से उसे बंधा जा सकता है। पूज्य युवाचार्यश्री का पुण्यबल और पुण्य का उदय होने के साथ यह निश्चित है कि पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर

सूरीश्वरजी महाराजा देह त्याग करने के बाद आपका भरपूर आर्शीवाद युवा आचार्य भगवंत को प्राप्त हो रहा है। सुवासरा में संयम बालमुनि बने श्री सिद्ध ऋषिरत्न सागरजी म.सा. और सैलाना में दिव्यांश से बालमुनि बने श्री देवर्धिरत्नसागर म.सा. से जितना नवरत्न गुरुकुल श्रमण समर्थ बना है उतना ही सागर समुदाय श्रमण प्रधान बना है। यह सब कुछ पूज्य जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी महाराजा की पुण्य समृद्धि है। यही कहानी मध्यप्रदेश, राजस्थान, झारखंड में भी दोहराई जायेगी साधु जीवन की महत्ता को सिद्ध करनेवाले आयोजन से मालवा ही नहीं झारखाण्ड और राजस्थान भी लाभांवित हुवे। मालवा के अनेक श्रीसंघों के साथ राजस्थान, झारखण्ड भी शासन प्रभावना के कार्यो से यादगार बन गये है। बदनावर, रियावन, कानवन में प्रतिष्ठा महोत्सव का स्मरणीय आयोजन होने के साथ 14 फरवरी से सैलाना में दिव्यांश मोदी अपना जीवन युवा मुनिवर श्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा. को समर्पित किया इसके बाद विहार झारखाण्ड की ओर होगा। क्रियाशील जैनाचार्य मालवा के आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा अपने प्रभाव पुण्य और पवित्राता से शासन प्रभावक कार्य से यादगार मिसाल बनते जा रहे हैं। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागरसूरीजी महाराजा परमात्मा श्री वीर प्रभु के शासन की अभिवृद्धि के लिये अपने सम्पूर्ण पुण्यबल का सुनियोजित उपयोग कर स्वयं और आपश्री ने गुरुकुल के युवा मुनिपुंग न जिन शासन की भरपूर प्रभावना कर देश भर में जैनत्व का नया इतिहास रच दिया हैं। युवा श्रमण भगवंतों ने अद्‌भूत शासन भक्तिकर युवा और वरिष्ठधार्मिष्ठों को आकृषित कर जैनत्व का सम्मान किया पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने श्री वीरप्रभु के शासन को उज्जवल बनाने के लिये वर्तमानकाल में जैनत्व का शंखनाद कर रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल ने डंका बजा दिया है। श्री वीर प्रभु की पाट परम्परा में अपना योगदान देने के लिये बाल संयमी गुरुकुल से निरतंर जुड रहे है। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा की आठवीं पुण्यतिथि के निमित्त महोत्सव का आयोजन 31 जनवरी को भोपावर में हुआ। श्री सम्मेदशिखरजी महातीर्थ की ओर चल रहा है।35 कल्याणक भूमि के अध्यक्ष श्री कमलसिंहजी रामपुरिया कोलकत्ता की पूज्यश्री से आग्रहभरी विनंती पर विश्वविख्यात महातीर्थ श्री सम्मेदशिखरजी के अधिष्ठायक देव श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा 21 अप्रेल को निश्चित हुई है15 से 23 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली का आयोजन भी होगा। श्री भौमियाजी मंदिर में प्रतिष्ठा सम्पन्न कर आपका विहार राजस्थान जयपुर में चार्तुमास में होगा। गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्न सागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्नसागर जी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदयरत्न सागर जी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागर जी म. सा. ,प.पू. मुनि श्री उज्वल रत्न सागर जी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्न सागरजी म.सा.,प.पू. मुनि श्रीलब्धि रत्न सागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्नसागर जी म.सा. मुनिश्री ऋषभ रत्नसागरजी म.सा .मुनि श्रीसिध्दरत्न सागरजी म. सा.आदि ठाणा साथ में है

मोहनखेड़ा में शाश्वत नवपद ओली

मोहनखोड़ा-श्री मोहनखोड़ा महातीर्थ में सर्व विघ्न विनाशली चैत्रमास की शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन होने जा रहा है। पूज्य कोंकण केशरी आचार्यदेव श्री लखेन्द्रविजय सूरीजी महाराज आदि ठाणा साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यह आयोजन होगा। नवदिवसीय आराधना 15 अप्रेल से 23 अप्रेल तक होगी। दिनांक 24 अप्रेल को आराधकों का पारणा सम्पन्न होगा। आराधना क्रिया विधान और निश्रा प्रदान करने के लिये पूज्यश्री का प्रवेश दिनांक 14 अप्रेल को होगा।

प्रकृति का कालचक्र नियम

1- बचपन:- समय है, शक्ति है, लेकिन पैसा नहीं है....

2- युवावस्था:- शक्ति है, पैसा है,लेकिन समय नहीं है....

3- बुढ़ापा:- पैसा है, समय है, लेकिन शक्ति नहीं है....

प्रकृति का कोई जवाब नहीं, इसलिये प्रतिदिन हर्ष.... उल्लास.... और खुशी....

भोपावर तीर्थाधिपति श्री शांतिनाथ दादा एवं गुरुमंदिर का चतुर्थ ध्वजारोहण 12 मार्च को होगा

भोपावर- 87000 वर्ष प्राचीन 16 वें तीर्थंकर परमात्मा श्री शांतिनाथ प्रभु की काउसग्ग मुद्रा की मनोहारी प्रतिमा से विश्व ख्यातिनाम श्री भोपावर तीर्थ में दादा के भव्य जिनप्रसाद तथा गुरुदेव श्री मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के गुरु मंदिर की चतुर्थ ध्वजारोहण महोत्सव का आयोजन 12 मार्च, मंगलवार को होगा। ध्वजा के मुख्य लाभार्थी संघवी पंकुबाई भूरमलजी तेजमलजी कोठारी परिवार के द्वारा ध्वजारोहण होगा। गुरु मंदिर में प्रीतेश ओसवाल, श्री प्रतीक डोशी, श्री प्रशांत सकलेचा तथा श्री राव बिजावत परिवार के द्वारा ध्वजारोहण होगा। इस प्रसंग पर पावन निश्रा गणिवर्य श्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा रहेगी। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई जायेगी। महातीर्थ के अध्यक्ष श्री रमण भाई जैन मोंटेक्स ग्रुप के साथ अनेक विशिष्टअतिथियों का आगमन भी इस अवसर पर होगा।

शिमागो में अंजनशलाका- 100 पारणा संभव भगवती प्रवज्या महोत्सव का आयोजन

✻ आचार्यश्री विजय महासेनसूरी की निश्रा रही।

शिमोगा- कर्नाटक इस नगर पूज्य पाद आचार्य देवेश श्री विजय महासेन सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमूल निश्रा में जिन शासन के तीन महा आयोजन हुए। अंजन प्रतिष्ठा के साथ 100 ओली पारणा तथा भगवती प्रवज्या से दर्शन-ज्ञान चरित्र तीनों की आराधना का लाभ श्री संघ को मिला। दिनांक 8 से 20 फरवरी तक भव्य आयोजन में ओली पारणा 11 फरवरीको दीक्षा, 14 फरवरी को तथा भव्य पंच कल्याणक की मंचीय प्रस्तुति के साथ प्रतिष्ठा 19 फरवरी को सम्पन्न हुई। ऐतिहासिक चढ़ावे हुए। दिनांक 20 फरवरी को महोत्सव द्वारोद्घाटन के साथ पूर्ण हुआ।

कन्या 99 यात्रा का आयोजन

पालीताना- पूज्य साध्वीवर्या श्री तत्वपूर्णा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरीराज की कन्या 99 यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। नव्वांणु यात्रा का शुभारंभ दिनांक 14 अप्रेल से होगा तथा पूर्णाहुति दिनांक 5 जून को होगी।

विरति उपधान तप का आयोजन

पालीताना- पूज्य आचार्यदेव श्री ललितप्रभसूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप दिसंबर में आरंभ हुआ। उपधान तप का मालारोपण दिनांक 16 फरवरी 24 को हुआ। उपधान का आयोजन श्री पन्नारुपा धर्मशाला में हुआ।

नूतन आचार्यश्री का चार्तुमास पूना में

पूना-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य नूतन आचार्य देवेश वैराग्यरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराज का 2024 का चार्तुमास पूना में होने जा रहा है। आपका चार्तुमास सोमवार पेठ पूना में निश्चित हुआ है। आप अभी मुंबई में विराजमान है।

साध्वीश्री सिद्धांत ज्योतिश्री दुर्घटना में घायल

सतना- सागर समुदाय के पूज्य आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य आचार्य भगवंत श्री अपूर्वरत्नमंगल सूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी सुशिष्या साध्वी श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी आदि ठाणा चार कटनी की तरफ से विहार करते सतना होते बनारस विहार उपरांत सतना से 55 कि.मी.पहले मैहर के पास हाईवे पर साहबजी के साथ चल रही रोड़ के किनारे खड़ी मारुती वैन को ट्रक ने जोरदार टक्कर मारकर वैन के आगे खड़ी साध्वी श्री सिद्धांतज्योति श्रीजी म.सा. को जोरदार ठोकर लगने से गंभीर चोट आई उसके पश्चात एम्बुलेंस से सतना बिड़ला अस्पताल में भर्ती किया जहां अब श्री साध्वीश्री का स्वास्थ्य स्थिर एवं सुधार पर है। रक्त रिसाव अधिक होने से सतना संघ के युवा सदस्यों को रक्त अर्पित करने का सौभाग्य मिला। सतना श्री संघ पूज्य साध्वीजी एवं साथ में पूज्य साध्वी श्री सिद्धांत ज्योतिश्रीजी म.सा.आदि ठाणा सभी साता में है।

श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर का ध्वजारोहण महोत्सव पूज्यपाद सागर गच्छाधिपति की निश्रा में हुआ

❊ गौड़ी पार्श्वनाथ जिनालय में संघ स्थविरश्री की गुणानुवाद सभा हुई।

पूना- सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा, आचार्य देवश्री विरागसागरसूरीजी महाराजा, वर्धमान तपोनिष्ठ मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी महाराज एवं पूज्य साध्वीवर्या दिव्यदर्शना श्रीजी म.सा. साध्वीवर्या श्री सिद्धपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा से श्री संघ स्थविर गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा के द्वारा प्रस्थापित श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर कात्रज की 28 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण महोत्सव का आयोजन 22 से 24 फरवरी तक किया गया। दिनांक 24 फरवरी को ध्वजा चढ़ाई गई। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई एवं श्री संघ का स्वामी वात्सल्य हुआ। दिनांक 25 फरवरी को गौड़ी पार्श्वनाथ जैन मंदिरजी के परिसर में पूज्य गच्छाधिपति की निश्रा में श्री संघ स्थविरश्री की गौरव गाथा स्वरुप गुणानुवाद का आयोजन किया गया एवं नूतन गच्छाधिपति का भावभीना स्वागत अगवानी कर कामली वोराई गई। इस प्रसंग पर पूज्य जैनाचार्यश्री महाबोधि सूरीश्वरजी महाराज की गरिमामय उपस्थिति रही।

दादा के 18 अभिषेक और ध्वजा चढ़ाई जावेगी

पालीताना- श्री शत्रुंजय तीर्थाधिपति श्री आदिश्वर दादा के दीक्षा कल्याणक पर दादा के 18 अभिषेक के साथ दादा की 493 वीं वर्षगांठ पर मूलनायक प्रभु की जिनालय के शिखर पर ध्वजा चढ़ाने के लिये दिनांक 26 नवंबर को बोली हुई। बोली सुबह 10 बजे से भाताघर जय तलेटी पर के पास बोली गई। दादा के अट्ठारह अभिषेक दिनांक 2 अप्रेल को होंगे तथा वर्षगांठ पर ध्वजा 19 मई को चढ़ाई जावेगी।

साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी का चातुर्मास

पाली- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति सागर समुदाय की वरिष्ठ साध्वीवर्या रही तपस्वी साध्वी कुसुम श्रीजी म.सा. की सुशिष्या साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. एवं बाल साध्वी श्री ध्वनिरत्ना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास पाली के गुजराती जैन आराधना भवन में होगा। चातुर्मासिक आराधना के अंतर्गत अनेक विविध तप, जप, अनुष्ठान महोत्सव के आयोजन की बड़ी श्रृंखला है।यहां पर पूज्य मुनिराज श्रीसुमतिचन्द्रसागरजी म.सा. का श्री चातुर्मास होने जा रहर है। साध्वी श्री चन्द्ररत्ना श्रीजी म.सा. की निश्रा में लोद्रवपुर राज. में जिनमंदिर का ध्वजारोहण आदि करर्सकम का आयोजन हुआ।

राष्ट्रसंत का चार्तुमास श्री नाकोड़ा तीर्थ में

मुंबई- सागर समुदाय के वरिष्ठ संत जैनाचार्य श्री चन्द्राननसागर सूरीजी महाराजा के गुरुभक्तों का मिलन समारोह दिनांक 8 दिसंबर को चेम्बुर वेस्ट के श्री ऋषभदेव जैन मंदिर में आयोजित किया गया। श्री नाकोड़ दर्शन परिवार ने आयोजित किया था। पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ महातीर्थ से निश्चित हुआ। आपश्री की निश्रा में मुंबई में चार प्रतिष्ठा महोत्सव होने के बाद आपश्री ने दिनांक 23 दिसंबर को राजस्थान की ओर विहार किया है। राजस्थान में आपश्री की निश्रा में पांच अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव होनेवाले है। मुंबई में आपश्री के वरद हस्ते 136 अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव हो चुके है।

श्री गिरीराज की 99 यात्रा शाश्वत परिवार के द्वारा

मुंबई- पूज्य आचार्य श्री आनंदवर्धनसूरीजी महाराजा एवं आचार्य श्री आत्मदर्शनसूरीजी महाराज की निश्रा में दादा की 99 यात्रा का आयोजन दिनांक 27 अप्रेल से आरम्भ होगा। बिदाई बहुमान दिनांक 30 मई को होगा।

गिरनार में चार्तुमास

गिरनार- पूज्य अध्यात्मयोगी श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य पूज्य आचार्य भगवंत श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी महाराज आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद का आगामी सामूहिक चार्तुमास श्री गिरनार महातीर्थ में होने जा रहा है। सामूहिक रुप से 500 आराधक का चार्तुमास 50 दिवस का होगा।

गणिवर्यश्री के द्वारा संयम अर्पण के साथ मालवा के श्री संघों में शासन प्रभावना का रंग जमाया

✻ चार्तुमास अहमदाबाद में। ✻ बांजना में दीक्षा महोत्सव सम्पन्न। ✻ चैत्र ओली उज्जैन में करायेंगे।

उज्जैन पूज्यपाद आचार्य देवेश मालव भूषण श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रशिष्य पूज्यपाद गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागर जी म.सा.गणिवर्य श्री अक्षतरत्नसागर जी म.सा.आदि ठाणा श्रमण-श्रमणी वृंद की निश्रा मेंबांजना दीक्षा प्रदान करने के पूर्व 10 फरवरी को महामांगलिक भी प्रदान की। दीक्षा महोत्सव 10 से 14 फरवरी तक चला दिनांक 13 फरवरी को वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित हुआ था, बाजना निवासी पूजा बाफना को पूज्य गणिवर्यश्री ने संयम मार्ग पर दिनांक 14 फरवरी को आगे आने के लिये रजोहरण प्रदान किया हुआ। यहां से आपश्री का विहार रतलाम की ओर हुआ जहां आपश्री का मंगल प्रवेश 23 फरवरी को भव्य सामैया के साथ हुआ। गुजराती उपाश्रय में स्थिरता रही। **आपश्री की निश्रा में दिनांक 15 अप्रेल से 23 अप्रेल तक शाश्वत नवपद चैत्र ओली की आराधना का आयोजन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने जा रहा है। यहां से आपश्री का विहार झाबुआ की ओर होगा जहां आपश्री की महामांगलिक होगी। आपश्री का चार्तुमास अहमदाबाद में होने की संभवना है।**

शंखेश्वर प्रेमी आचार्य श्री महासेन सूरीजी की शासन प्रभावना

✻ प.पू. कविकुलकीरिट आ.श्री लब्धिसूरीजी म. के दिव्य साम्राज्य पू. शंखेश्वर प्रेमी आ. महासेनसूरीजीआदि साध्वी विरतिपूर्णाश्री आदि की पावन निश्रा में चार्तुमास आराधना सम्पन्न हुई।

✻ बैंगलोर से विहार कर टुमकुर आदि क्षेत्रों में लाभ देकर माघ सुदी-10 के पावन दिन शिमोगा नगरी में प्रभु प्रतिष्ठा-अंजनशलाका हेतु भव्य प्रवेश हुआ। महोत्सव जाजम बिछाने का चढ़ावा हुआ। माघ सुदी-11 मौन एकादशी की आराधना भाविकों ने उल्लास से की, माघ सुदी-13 को शुभ मुर्हूत में प्रतिष्ठा के चढ़ावे अनुमोदनीय हुए, संगीत सम्राट नरेन्द्र वाणीगोता ने रंग जमाया, श्री संघ के भाविकों ने रेकार्ड रुप चढ़ावा बोलकर कर्णाटक, शिमोगा संघ का नाम रोशन करके जिनशासन का डंका बजाया। ✻ 70 वर्ष पूर्व पू.आ.लक्ष्मण सूरीजी म.सा. हस्ते श्री आदिश्वर दादा की प्रतिष्ठा हुई थी, नूतन जिनालय में संकेत मिलने पर प्रभुजी मूलनायक बिराजमान होंगे।

✻ पौष दशमी आराधना तीन दिन का लाभ शा.नेनमलजी गुलाबचंद परिवार ने उदारता से लिया। 65 अट्ठम, 60 आयंबिल, 10 एकासन में तपस्वी जुड़े, विशिष्टबहुमान किया, भद्रावती संघ में साध्वीजी म. की निश्रा में पोष दशमी आराधना अनुमोदनीय हुई, 60 अट्ठम के तपस्वी थे, तपस्वियों को पंचतीर्थ यात्रा कराई।

✻ श्री संघ में महोत्सव आमंत्रण पत्रिका लेखन ठाठ से सम्पन्न हुआ।

✻ पौष वदी-3 को दादा की ध्वजा का वधामणा कार्यक्रम अनुमोदनीय हुआ। श्री संघ के भाविकों के गृहांगण में ध्वजा धरामणी 7 दिन कार्यक्रम हुआ, ध्वज पूजा-प्रभावना करके भाविकों ने अनुमोदनीय लाभ उठाया। ✻ श्री संघ में आदि प्रभु का सवा लाख, नवकार का सवा करोड़ जाप, सांकली, अट्ठम आयंबिल चालु है, महोत्सव प्रारंभ दिन पोष वदी-14 को आयंबिल तप की नवकारसी हुई, 700 भाविकों ने पास लिया, विशिष्ट प्रभावना हुई।**✻ वि.सं. 2080 का चार्तुमास बैंगलोर-जयनगर संघ में जय बुलाई गई।**

श्री शत्रुंजय आदिनाथधाम में ध्वजारोहण

महिदपुर- श्री शत्रुंजय आदिनाथ धाम में 13 वीं ध्वजारोहण का आयोजन 22 से 23 फरवरी को हुआ। पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेव सूरीजी महाराज, आचार्य देवश्री मोक्षरत्नसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में सागर समुदाय के गच्छाधिपति श्री सूर्योदयसागरसूरीजी की 14 वीं पुण्यतिथि भी मनाई गई। दिनांक 22 फरवरी को 18 अभिषेक हुए। दिनांक 23 फरवरी को श्री स्नात्र तथा सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई। दिनांक 24 फरवरी को ध्वजारोहण हुआ।

बंधु त्रिपुटी की निश्रा में तीन राज्यों के जिनमंदिर की प्रतिष्ठा का जोरदार रंग जमा

✲ चार्तुमास हेतु गदक कर्नाटक की ओर विहार होगा।

सीतामऊ-जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटी मुनि प्रवर श्री आगम प्रश्म- व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा कर निश्रा में प्रतिष्ठा का जोरदार रंग जम गया है। सीतामऊ में 11 फरवरी को हुई प्रतिष्ठा ने एक नया इतिहास सर्जित कर दिया। प्रतिष्ठा दिवस पर ही एक श्रावक श्री अरविंद ओस्तवालजी ने 54 लाख रुपये की भूमि जिन मंदिर के लिये दान कर दानवीर बनने का सौभाग्य जाग्रत किया झालावाड़ में 21 फरवरी, सोयतकलां में 29 फरवरी, रटलाई (राज.) में 3 मार्च, पचोर में 13 मार्च, सुखेड़ा में 4 अप्रेल, गौतमपुरा में 15 अप्रेल, सीतामऊ जहाज मंदिर में 26 अप्रेल तथा सीतामऊ के गांव मंदिर में 28 अप्रेल को प्रतिष्ठा आयोजन सम्पन्न होंगे। मुनि भगवंतों का यहां से गदक कर्नाटक की ओर आपका विहार होगा जहां आपका आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है।अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोजकुमार बाबूमलजी हरण का शासन के प्रति अनुराग और पुण्यबल श्री संघों में आपकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से साकार हो जाता है। आपका योगदान जैन इतिहास में स्वर्णाक्षर में अंकित हो गया है।

प्रतिष्ठाचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. के आगामी कार्यक्रम

✲ श्री चेलावास नगर (वाया मारवाड़ जंक्शन) श्री नमिनाथ भगवान जिन मंदिर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव 8-3-2024 से होगा।✲ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री कुमार पाल चैत्र मास ओली समिति, चैन्नई द्वारा 1100 से अधिक आराधकों के साथ सामुदायिक ओली आराधना प्रारंभ दिनांक 15 से तथा समाप्त 23 अप्रेल2024 को होगी। ✲ श्री शंखेश्वर महातीर्थ में श्री पार्श्व-भैरव-सुशील धाम के परिसर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ चौमुख जिन मंदिर, श्री गौतम गुरु मंदिर, श्री नाकोड़ा भैरवजी का चौमुखा मंदिर का खनन मुर्हूत एवं शिलान्यास मंगल मुर्हूत खनन मुर्हूत16अप्रेल 2024 को, शिलान्यास मुर्हूत18अप्रेल को होगा। **आपका आगामी चार्तुमास श्री शिवगंज राज. के जैन श्वेतांबर उपाश्रय में होने की घोषणा हुई है।**

श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में 99 यात्रा का आयोजन सिर्फ श्रावक के लिये दिनांक 15 अप्रेल से होने जा रहा है। यह यात्रा पूज्य आचार्यदेवश्री संयमबोधि सूरीश्वरजी महाराज आदि साधु-साध्वी ठाणा की निश्रा में होगी। सुनतर भवन पालीताना से यात्रा आरंभ होगी।

जोधपुर में चार्तुमास

जोधपुर- श्री भेरुबाग पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर तीर्थ में पूज्य आचार्यदेव श्री तत्वदर्शन सूरीश्वरजी महाराज का आगामी चार्तुमास निश्चित हुआ है। आपश्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी म.सा. के प्रशिष्य है।

आगामी चार्तुमास की जय बोलाई गई

मुंबई- यहां के विलेपार्ले श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ की आग्रहभरी विनंती पर पूज्य आचार्य देवेश श्री अक्षयबोधि सूरीजी तथा आचार्यदेव श्री महा बोधि सूरीजी महाराज का आगामी वि.सं. 2080 ईस्वी सन् 2024 का चार्तुमास विलेपार्ले श्री संघ में करेंगे। संघ में चार्तुमास की घोषणा से हर्ष छा गया।

पालीताना में चार्तुमास

पालीताना- सनतर भवन पालीताना में 2024 का चार्तुमास होने जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री आनंदवर्धना सूरीजी एवं श्री आत्मदर्शन सूरीजी महाराज आदि ठाणा की निश्रा में चार्तुमास दिनांक 20 जुलाई से आरंभ होगा तथा समापन 8 सितंबर को होगा।

राजगढ़ में चार्तुमास होगा

राजगढ़- जिनागमसेवी पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देव श्री दौलत सागर सूरीजी महाराज साहब की आज्ञावृत्ति पूज्य साध्वी श्री हेमेन्द्र श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्यश्री चारुव्रता श्रीजी महाराज की शिष्या पूज्य नम्रवृता श्रीजी महाराज श्री मग्नवृता श्रीजी महाराज मीतवृता श्रीजी महाराज आदि ठाणा-3 का आगामी चार्तुमास राजगढ़ निर्धारित हुआ है।

मालव मार्तण्ड जैनाचार्यश्री का 47 वां संयोमोत्सव कल्याण मंदिर की प्रथम वर्षगांठ मनी

✻ जैनाचार्य अचलमुक्तिसागरसूरी की आचार्य पद की प्रथम वर्षगांठ मनी।

✻ पेढ़ी कार्यालय का उद्घाटन : त्रिदिवसीय महोत्सव हुआ

✻ वर्षीतप पारणा में निश्रादाता रहेंगे।

उज्जैन- पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदयसागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य श्रीजैनाचार्य श्री मुक्ति सागरसूरीजी एवं आचार्यदेव श्री अंचल मुक्तिसागर सूरीजी म.सा.मुनिश्री पावन सागरजी मुनि श्री मनमुक्तिसागरजी म.सा.आदि ठाणा का उज्जैन 18 फरवरी को उज्जैन नगर प्रवेश हुआ। श्री अभ्युदयपुरम् तीर्थ में उपधान तप में दिनांक 14 अप्रेल 2024 को प्रथम तथा दिनांक 16 अप्रेल को द्वितीय प्रवेश होगा। उपधान तप का वरघोड़ा 1 जून को आयोजित होगा। मालरोपण विधान दिनांक 2 जून को सम्पन्न होगा।श्रीमती ज्योति बहन नलिनभाई दलाल परिवार पूना सम्पूर्ण लाभार्थी है। पूज्यश्री के साथ साध्वीवर्या मुक्तिरेखा श्रीजी, दमिताश्रीजी, चारुधर्माश्रीजी, सम्यगदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में कल्याण मंदिर की प्रथम वर्षगांठ पर दिनांक 21 फरवरी को 108 पार्श्वनाथ पूजन तथा 22 फरवरी को वर्धमान शक्रस्तव, 18 अभिषेक होंगे दिनांक 23 फरवरी को ध्वजा चढ़ाई गई प्रथम वर्षगांठ पर 51 ध्वजा चढ़ाने के पूर्व भव्य वरघोड़ा निकाला गया। आचार्यदेव श्री मुक्तिसागर सूरीजी ने संयम जीवन के 47 वें वर्ष में विगत दिनों प्रवेश किया। जैनाचार्यश्री अचलमुक्तिसागरजी की आचार्य पदवी की प्रथम वर्षगांठ मनाई गई। **आपका आगामी चातुर्मास श्री अर्बुजगिरी जैन श्वेतांबर उपाश्रय इन्दौर में होने की घोषणा की गई है।**

कनघट्टी में ध्वजारोहण

कनघट्टी- मध्यप्रदेश के मंदसौर जिल के कनघट्टी में 300 वर्ष प्राचीन दादा श्री आदिनाथ प्रभु के जिन मंदिर में ध्वजारोहण का आयोजन दिनांक 15 फरवरी को किया गया। इस मंगल प्रसंग पर साध्वीवर्या श्री मोक्षज्योति श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का सानिध्य रहा। स्नात्र, सत्तरभेदी पूजन हुई। संघ का स्वामी वात्सल्य हुआ।

तपागच्छ अधिष्ठायकदेव श्री माणिभद्रवीर का 551 वां जन्म महोत्सव भारतभर में मनाया गया

✻ उज्जैन,आग्रलोड़,मगरवाड़ा,मातमोर में विशिष्ट ध्वजा पूजन हुए।

उज्जैन- जिन शासन के अधिष्ठायक तपागच्छ नायक श्री माणि भद्र वीर का 551 वां जन्मोत्सव सारे देश में उत्साह श्रद्धा के साथ मनाया गया। उज्जैन, आग्रलोड़, मगरवाड़ा, मातमोर में विशिष्ट हवन-पूजन का आयोजन किया गया।14 फरवरी बसंत पंचमी को उज्जैन में साध्वीवर्या साध्वीवर्या श्री सम्यगदर्शना श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में स्नात्र महापूजन सत्तर भेदी पूजन हुई। ध्वजारोहण एवं श्री माणिभद्रवीर का भव्य पूजन तथा हवन का आयोजन हुआ। इसी तरह के आयोजन आग्रलोड़, मगरवाड़ा में भी हुए। शिवपुर, मोतमोर में आचार्य श्री पद्मभूषणसूरीजी महाराज आदि ठाणा-10 की प्रेरणा से कलापूर्णसूरीजी समुदाय को साध्वी श्री विजयप्रभा श्रीजी की निश्रा में श्री माणिभद्रवीर का महापूजन हुआ।

श्री भक्तामर महातीर्थ में ध्वजारोहण हुआ

धार- श्री भक्तामर महास्तोत्र की रचना स्थली धार में स्थित श्री भक्तामर महातीर्थ में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ, श्री महावीर स्वामी जिनालय के साथ 50 जिन मंदिरों में एक साथ ध्वजारोहण का भव्य आयोजन हुआ। आयंबिल के महातपस्वी वर्धमान तप युग प्रभावक आचार्य देवेश श्री चन्द्ररत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में ध्वजारोहण 15 फरवरी को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न हुआ।

आगामी चार्तुमास

औरंगाबाद- यहां चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य मुनिश्री हंसबोधि विजयजी म.सा. का तथा तपस्वी श्री भद्रकीर्तिविजयजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास अहमदाबाद के शांतिनगर जैन संघ उस्मानपुरा में घोषित हुआ है। पूज्य पंन्यास श्री मनोभूषणविजयजी म.सा. का चार्तुमास भी यहीं होगा।

मालव भूषण सूरीजी महाराजा 81 वां जन्मोत्सव जीवदया-अनुकम्पा सद्कार्यो केसाथ बनाया जायेगा

✻ त्रिदिवसीय जन्मोत्सव 28 से 30 मार्च तक मनेगा। ✻ प्रेरणा मार्गदर्शन जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी की है।

उज्जैन- मालवा के भगवान के रुप में जिन्हें मान्यता गुरुभक्तों ने दी है ऐसे गुरुदेव पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा का 81 वां जन्मोत्सव त्रिदिवसीय महोत्सव के रुप में दिनांक 28 से 30 मार्च तक मनाया जायेगा। पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की और प्रेरणा और मार्गदर्शन में गुरुदेव के जन्मोत्सव पर जीवदया अनुकम्पा दान के साथ सदकार्यों से किया जायेगा साथ ही श्री संघ में पूज्यश्री की गुणानुवाद सभा का आयोजन भी भारतभर के जैन श्री संघों में किया जायेगा। चैत्र वदी-3 दिनांक 28 मार्च को जन्म का शुभ दिन है इस दिन जिनालय में स्नात्र पूजन-आंगी भक्ति के आयोजन भी होंगे।

गच्छाधिपति समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अभयदेव सूरीजी महाराजा की की भावभिना अगवानी हुई

✻ त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन हुआ।

उज्जैन- गच्छाधिपति समिति के कार्यकारी अध्यक्ष गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री अभयदेव सूरीश्वरजी महाराजा, आचार्यदेव श्री मोक्षरत्न विजय सूरीश्वरजी महाराजा डहेला वाला समुदाय के साधु-साध्वीवृंद का उज्जैन आगमन पर भव्य सामैय्या आयोजित कर भावभीनी अगवानी की गई। पूज्यश्री की उज्जैन में स्थिरता 26 से 28 फरवरी तक रही। दिनांक 26 फरवरी को श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी के अंतर्गत श्री मूलनायक श्री आदिनाथ दादा प्रभु श्री वीरस्वामी तथा श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा के ध्वजारोहण में आपश्री में सम्पन्न हुआ। दिनांक 28 फरवरी को सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति संघ स्थविर श्री दौलत सागर सूरीजी महाराजा, श्री नंदीवर्धन सागर सूरीजी महाराजा एवं श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के सम्मान में भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। पूज्यश्री ने अपने संस्करणों से संघ को अवगत कराया। वक्ताओं ने भी अपने अनुभव सुनाये। डॉ. सुभाष जैन, आगमोद्धारक ने भी ओजस्वी वक्तव्य दिया। पूज्यश्री सतना की ओर विहार कर रहे है जहां आपश्री की निश्रा में प्रतिष्ठा-दीक्षा आदि का आयोजन होने जा रहा है।

100 वें मासक्षमण का पच्चखााण

मुबई-श्री घाटकोपर जैन श्वेतांबर मू. त. संघ में विश्व का चमत्कार हो रहा है इस कलिकाल के 11 आश्चर्य 6 बार 180 उपवास और 99 मासक्षमण के दिव्य तपस्वी रत्न परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय हंसरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के 100 मासक्षमण का पच्च कखान प्रसंग पावन निश्रा परम उपकारी गुरुदेव प्रशांतमूर्ति गच्छाधिपति परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा, मासक्षमण पच्चकखान मंगल दिन 1 मार्च 2024 को लिया।

आचार्यश्री मृदुरत्नसागर सूरीजी के आगामी कार्यक्रम

✻ 11 मार्च बेसता महिना की महामांगलिक, लीमड़ी जैन श्री संघ में। ✻ 23-24 मार्च, फागण सुद-13-14 की आराधना शीवगम। ✻ 23 मार्च से 4 अप्रेल अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव-सुखेड़ा ✻ 9 अप्रेल बेसता महिना की महामांगलिक-घाटोल ✻ 18 अप्रेल से 22 अप्रेल प्रतिष्ठा महोत्सव-मोटागांव। ✻ 9 मई, बेसता महिना की महामांगलिक-उंठई (बड़नगर)। ✻ 12 से 13 मई, सीपोर से तारंगा तीर्थ का पैदल संघ (पूज्यश्री के गांव से)। ✻ 18, 20 मई, दो मंदिर में ध्वजा महोत्सव-विसनगर। ✻ 7 जून बेसता महिना की महामांगलिक-अहमदाबाद। ✻ 14 जून पू. आ.श्री की 41वीं दीक्षा तिथि, अर्हत् महापूजन-अहमदाबाद। ✻ 6 से 7 जून बेसता महिना की महामांगलिक-भावनगर। ✻ 19 जून चार्तुमास प्रवेश साबरमती धर्मशाला में पालीताना।

गणिवर्य आनंदचंद्रसागरजी द्वारा दौलतश्रीजी के गुणकीर्तन तथा जिनालय का शिलान्यास किया गया

✻ मार्च के प्रथम सप्ताह में उज्जैन आगमन।

इन्दौर- पूज्य बंधुबेलड़ी आचार्यश्री के गुरुकुल की ख्याति में चार चांद लगानेवाले गणिवर्यश्री पद्मचन्द्र सागरजी म.सा. के सुशिष्य गणिवर्यश्री आनंदचंद्रसागरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में यहां दिनांक 21 फरवरी को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर के लिये शिलान्यास किया गया। बीचोली मर्दनाक्षेत्र में जिन मंदिर की भेंट आपके द्वारा प्रदान की गई है। दिनांक 25 फरवरी को सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा का कालधर्म निमित्त भव्य गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में साध्वी श्री पद्मलता श्रीजी, अर्चित गुणाश्रीजी, ताम्रवताश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा भी रही। यहां से गणिवर्य श्रीजी का विहार उज्जैन की ओर होने की संभावना है।

तपागच्छीय प्रवर समिति कार्यवाहक पूज्य गच्छाधिपति का मालवा विहार

उज्जैन- तपागच्छीय प्रवर समिति कार्यवाहक पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत विजय श्री अभयदेव सूरीश्वरजी म.सा. एवं उनके शिष्य रत्न मार्गदर्शक प.पू.आचार्य भगवंत श्री विजय मोक्षरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणीवृंद मालवा का विहार चल रहा है। दिनांक 15 फरवरी को मंदसौर नई आबादी से विहार कर 19 फरवरी को नागेश्वर तीर्थ पधारे यहां से आपश्री का 24 फरवरी को उज्जैन भेरुगढ़ माणिभद्रवीर तीर्थ आगमन हुआ। 25 फरवरी को सुबह अभ्युदयपुरम् शाम को हासामपुरा (अलौकिक पारसनाथ), 26 फरवरी को सुबह उज्जैन अवंति पारसनाथ होकर खाराकुआ जैन उपाश्रय, 27 फरवरी को सुबह उज्जैन खाराकुंआ मंदिरजी पधारे। 29 फरवरी को मक्षीजी तीर्थ से आपका आगमन हुआ। 10 मार्च को भोपाल आगमन हुआ तथा महावीर गिरी तीर्थ, 11 मार्च को महावीर गिरी तीर्थ भोपाल (म.प्र.) बेसते महीने का महाप्रभावक ऋद्धि-सिद्धि समृद्धिदायक महामांगलिक प्रदान की। सतना में 5 अप्रेल से अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं भवन का उद्घाटन, चैत्र नवपद आयंबिल ओली का कार्यक्रम 24 अप्रेल तक सतना में विराजमान रहेंगे। 9 अप्रेल को बेसते महिने की महामांगलिक सतना में होगी। 9 मई की बेसते महिने की महामांगलिक सागर के आसपास म.प्र. में होगी। पूज्य गुरुदेव का अभय अमृत महोत्सव 7 जून को बेसते महिने के महामांगलिक साथ में अभिनव समेत शिखरजी वही तीर्थ मंदसौर के पास म.प्र. में बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। पू.गुरुदेव का सं. 2080 का चार्तुमास मंडार (राज.) में होगा। प्रवेश आषाढ़ सुदी-8 रविवार दिनांक 14 जुलाई को ।

परमात्मा का मंगल प्रवेश हुआ

इन्दौर-श्री मंत्रेश्वर चिंतामणी पार्श्वनाथ मंदिरजी में जग जयंता श्री जीरावला पार्श्वनाथ दादा की प्रतिमा के मंगल प्रवेश के ध्वजदण्ड प्रतिष्ठा ध्वजारोहण का आयोजन दिनांक 14 फरवरी को किया गया। इस मंगल प्रसंग पर परमात्मा के मंगल प्रवेश पर साध्वीवर्या श्री पद्मलता श्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री हेमप्रज्ञा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की मंगल उपस्थिति रही।

पालीताना में संयम संकल्प महोत्सव

पालीताना- श्री सिद्धाचल महातीर्थ के आंगन में श्री जिनविहार धर्मशाला में चार मुमुक्षु आत्मन् की भगवती प्रवज्या सम्पन्न हुई। श्रीमती कांताबहन, नेहा संघवी, तन्वी संघवी तथा शैली संघवी का दीक्षा महोत्सव त्रिदिवसीय महोत्सव के रुप में 17 से 19 फरवरी तक आयोजित संयम संकल्प महोत्सव का आयोजन खतर गच्छ के गणिवर्य श्री राजरत्नसागरजी म.सा., महाराजश्री दिव्यप्रथा श्रीजी एवं श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की निश्रा रही। 17 फरवरी को कपड़ा रंगने का आयोजन हुआ। 18 फरवरी को चारों मुमुक्षु आत्मन् का वर्षीदान आयोजित किया गया। 19 फरवरी को चारों दीक्षार्थियों की सामुहिक दीक्षा शुभ मंगल बेला में सम्पन्न हुई।

✻ परमार्थ के सब साधनों में परम साधन सत्संग है; सत्पुरुष के चरण समीप का निवास है।

हासामपुरा महातीर्थ में वर्षीतप आराधकों का पारणा महोत्सव मनाया जायेगा

✻ 8 से 10 मई तक त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन होगा।

उज्जैन- गच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य देवेश वचनसिद्ध श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराज की मंगल प्रेरणा और मार्गदर्शन में विगत वर्ष श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी, श्री सिद्ध चक्राराधन तीर्थ पर 120 वर्षीतप आराधकों का सामुहिक वर्षीतप आरम्भ हुआ था सभी आराधकों की आराधना पूज्यश्री के आर्शीवाद से निर्विघ्न सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ रही है। वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीय दिनांक 10 मई शुक्रवार को आ रहा है। लगभग 35-40 आराधकों का पारणा महोत्सव का आयोजन त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ 8 से 10 मई तक श्री आलौकिक पार्श्वनाथ महातीर्थ हासामपुरा में आयोजित किया जायेगा। पारणा महोत्सव में बंधु युगल जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागर सूरीजी महाराजआयंबिलआराधक जैनाचार्य श्री चन्द्ररत्नसागर सूरीजी म.सा. ओलीजी आराधक मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा से निश्रा प्रदान करने के लिये विनंती की गई है आप अनुकुलता से पधारेगें पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री अभ्युदय सागरजी महाराज के सुशिष्य पूज्य आचार्यदेव श्रीजैनाचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी एवं आचार्य देव श्री अंचलमुक्ति सागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा ने पारणा समिति के 18 फरवरी निश्रा प्रदान करने के लिय स्वीकृति प्रदान कर दी है आसपास विराजमान साधु-साध्वी भगवंतों से पधारने की विनंती समिति के द्वारा की जायेगी। पारणा महोत्सव के लिये तैयारियां आरंभ हो गई है। पारणा महोत्सव समिति के अध्यक्ष शेखर कोचर एवं संयोजक सचिव डॉ. सुभाष जैन आमोध्दारक है

दयालकिला से नव्वांणु यात्रा

कांकरोली- श्री ऋषभदेव भगवान की पेढ़ी कांकरोली में दयाल शाह किला से नव्वांणु यात्रा का आयोजन दिनांक 19 मई से 9 जून तक होने जा रहा है। पूज्य आचार्यदेव श्री निपुणरत्नसागर सूरीजी महाराजा आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यह आयोजन होगा। रोज पांच यात्रा करने के लिये सिर्फ 250 सीढ़ियां की चढ़ाई करना है। गर्मी में अपने छोटे बच्चों के साथ तीर्थ और प्रकृति का आनन्द लेने का यह स्वर्णिम अवसर है।

पंन्यास पदवी

पूज्य आचार्य श्री विजय पद्मभूषणरत्न सूरीश्वरजी महाराज आदि-10 के साथ अनेक साधु-साध्वीजी की अमृत निश्रा में महाविदेह धाम वेसू, सूरत में गणिवर्य श्री ऋषभरत्न विजयजी म.सा. को दिनांक 25 फरवरी को पंन्यास पद पर आरुढ़ किया गया।

श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा

पालीताना- पूज्यपाद आचार्य श्री विजयसंयमबोधि सूरीजी म.सा.आदि श्रमण-श्रमणीवृंद की निश्रा में श्री शत्रुंजय गिरिराज की नव्वांणु यात्रा का आयोजन होने जा रहा है। यह यात्रा दिनांक 15 अप्रेल 2024 सोमवार से आरंभ होगी। लाभार्थी हंसा बहन मुलाणी परिवार है।

लक्ष्यवेध उपधान तप

चैन्नई- पूज्य आचार्य देवेश श्री अभयशेखर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की अमृत निश्रा में वाराही मंडण श्री शांतिनाथ प्रभु की छत्रछाया में उपधान तप का आयोजन कोलाट हित के दक्षिण भारत में प्रथम बार होने जा रहा है। उपधान में प्रथम प्रवेश दिनांक 16 अप्रेल को होगा। उपधान मोक्षमाल दिनांक 5 जून को होगी।

सतना के लिये मंगल मुर्हूत प्रदान किया

सतना- श्री आदिनाथ परमात्मा आदि जिनबिंबों की प्रतिष्ठा तथा मुनिश्री सुव्रतस्वामी जिनबिंबों की अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये पूज्यपाद गच्छाधिपति श्री अभयदेवसूरीजी महाराजा के द्वारा मंगल मुर्हूत प्रदान किया गया। जिन प्रतिमा का मंदिरजी के गर्भगृह में प्रवेश दिनांक 7 मार्च 2024 को होगा। पूज्यश्री का अंजन-प्रतिष्ठा के लिये मंगल प्रवेश दिनांक 5 अप्रेल को होगा। अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ कुंभ स्थापना के साथ दिनांक 6 अप्रेल से होगा। परमात्मा की अंजन विधि दिनांक 14 अप्रेल को होगी तथा प्रतिष्ठा दिनांक 15 अप्रेल को सम्पन्न होगी।

युगल बंधु मालव जैनाचार्यश्री का धार आगमन : चार्तुमास हुगली में होगा

✻ गुरु मंदिर का भूमिपूजन हुआ।

धार-जैनाचार्य वाणी के जादूगर पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्न सागर सूरीजी महाराजआयंबिल आराधक जैनाचार्यश्री चन्द्ररत्न सागर जी म.सा. को आयंबिल तप की 268 वीं ओलीजी आराधक मुनिश्रीचैत्यरत्न सागर जी मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनिश्री पवित्र रत्नसागरजी म.सा. मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा.आदि ठाणा का मालवा के धार स्थित भक्तामर महातीर्थ पहुंच गये है। श्री भक्तामर महातीर्थ में श्री मणिभद्र दादा के देव मंदिर एवं जैनाचार्य श्री जिनरत्न सागर सूरीजी महाराजके गुरु मंदिर का भूमि पूजन खानन मुर्हूत फागण वदी-5 दिनांक 29 फरवरी 2024 गुरुवार को हुआ।मालवा में विविध शासन प्रभावक महोत्सव में आपश्री की अमृत निश्रा रहेगी इसके बाद **आपश्री का विहार हुगली कर्नाटक की ओर होगा जहां आपश्री का चार्तुमास होगा।**

जाजम का मुर्हूत 28 अप्रेल को

मुंबई- श्री 108 पार्श्वनाथ में समाहित श्री 108 सेसली पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा निमित्त प्रथम चरण के चढ़ावों की जाजम का मुर्हूत पंजाब केसरी आचार्यश्री वल्लभ सूरीश्वरजी समुदाय गच्छाधिपति शांति दूत प.पू. आचार्य भगवंत श्री नित्यानंद सूरीश्वरजी म.सा. के प्रथम शिष्य आचार्यश्री चिदानंद सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रानी गांव में प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर रानी गांव में दिनांक 20 फरवरी को अत्यंत हर्षोल्लास भरे वातावरण में वैशाख सुद-4, रविवार दिनांक 28 अप्रेल का मुर्हूत प्रदान किया।

बलसाणा में सामूहिक अट्ठम तप हुए

बलसाणा- बलसाणा तीर्थाधिपति परमात्मा श्री विमलनाथ प्रभु की छत्र छाया में भव्य अट्ठम तप का आयोजन किया गया। पूज्य गणिवर्य श्री योगीरत्न विजयजी म.सा.आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में यह आयोजन हुआ। दिनांक 11 फरवरी को उत्तर पारणा के बाद 12 से 14 फरवरी को अट्ठम तप तथा 15 फरवरी को तपस्वियों का पारणा सम्पन्न हुआ। पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेवश्री रामचंद्रसूरीजी महाराजा डेहलावाला के 108 वें जन्मदिन निमित्त यह आराधना हुई।

प्रभु भक्ति महोत्सव मनाया गया

रतलाम- श्री सागोरिया तीर्थ में पूज्य आचार्य भगवंत श्री प्रसन्नचंद्र सागर सूरीश्वरजी महाराज की अमृत निश्रा में प्रभु भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 14 फरवरी को आयोजित भव्य आयोजन में दादा श्री आदिनाथ परमात्मा के साथ अन्य सभी जिन प्रतिमाओं का संगीत के साथ भव्य 18 अभिषेक किया गया। पूज्यश्री के प्रवचन का आयोजन भी हुआ। रात्री में परमात्मा की भक्ति हुई।

श्री अंतरिक्ष पार्श्व तीर्थ में 939 ध्वजा चढ़ाई गई

आकोला- अंतरिक्ष महातीर्थ में विराजमान महाराजाधिराज श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जिन मंदिर पर 939 वीं ध्वजा दिनांक 14 फरवरी को भव्य समारोहपूर्वक चढ़ाई गई। पूज्य आचार्य भगवंत श्री वरबोधिसूरीजी महाराजा तथा आचार्यदेवेश श्री विमलबोधि सूरी जी महाराज के साथ बड़ी संख्या में साधु-साध्वीश्री की अमृत निश्रा रही। सामुहिक स्नात्र पूजन, सत्तरभेदी पूजन स्वामीवात्सल्य हुआ। ध्वजा के लाभार्थी सुमेरचंद्रजी जैन दिल्ली थे।

श्री आदिनाथ प्रभु के जिनालय का भूमि खात शिला मुर्हूत हुआ

कुर्मुठ- श्री शंखेश्वर पार्श्व परम तीर्थ के समीम पश्चिम बंगाल के पुरुलिया के कुर्मुठनगर श्री आदिनाथ परमात्मा के जिन मंदिर निर्माण के लिये भूमि पूजन, खात मुर्हूत तथा शिलान्यास का आयोजन दिनांक 27 एवं 28 फरवरी को किया गया। पूज्य आचार्यश्री गच्छाधिपतिश्री, मुक्तिप्रभसूरीजी महाराज, पूज्य आचार्य श्री डॉ. विनीत प्रभुसूरीजी महाराजा आदि साधु-साध्वी की अमृत निश्रा में हुआ। मंदिर निर्माण का संपूर्ण लाभ श्री पुखराजजी जेठमलजी परिवार चैन्नई अहमदाबाद वालों ने लिया।

वरतेज में 153 वर्षी प्राचीन मंदिर का ध्वजारोहण

वरतेज- भावनगर के पास श्री संभवनाथ जिन मंदिर की 153 वीं वार्षिक ध्वजारोहण का कार्यक्रम दिनांक 21 से 23 फरवरी तक आयोजित किया गया। आचार्यदेव श्री पूर्णचंद्रसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा रही।

भाण्डवपुर में गुरु मंदिर प्रतिष्ठा-दीक्षा-प्रतिष्ठा का भव्य यादगार महोत्सव मना

भाण्डवपुर- राजस्थान के इस नगर में एक बार फिर जैनत्व के भव्य महोत्सव ने जिन शासन की गरिमा में चार चांद लगा दिये। अद्भूत साज-सज्जा के महायोजन को जिसने निहारा वह अभिभूत हो गया। पूज्य गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीजी महाराज तथा भाण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री विजय जयरत्नसूरीजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा रही। 5 से 20 फरवरी तक आयोजित हुए महोत्सव में सामुहिक दीक्षा का आयोजन 16 फरवरी को किया गया। गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा 19 फरवरी को हुई। दिनांक 20 फरवरी को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति हुई।

सूरत में वागड़ नरेशकी निश्रा में पंच महाव्रत संवेदना का आयोजन हुआ

✻ चार्तुमास श्री सिद्धगिरीराज की छत्रछाया में होगा।
✻ मालवा के सुखेड़ा में प्रतिष्ठा के आगमन होगा।

सूरत-पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा. पू. मुनिश्री पद्म रत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में बलसाड़ में महामांगलिक का आयोजन 10 फरवरी को होने के बाद आपश्री का आगमन नेमुभाई की वाड़ी, सूरत में हुआ। यहां आपश्री की निश्रा में पंच महाव्रत संवेदना का भव्य आयोजन, गुणानुवाद सभा के साथ हुआ। सभा में पूज्य मुनिश्री नेमसागरजी, पूज्य तत्यरसाश्रीजी, पूज्य मोहजीता श्रीजी पूज्य मोक्षरताश्रीजी, पूज्य विरकता श्रीजी, पूज्य मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी म.सा. आदि का गौरव कीर्तिगाथा का आयोजन दिनांक 18 फरवरी को किया गया। यहां से आपश्री का विहार मालवा के सुखेड़ा के लिये हुआ है जहां आपश्री की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 4 अप्रेल को यहां प्रतिष्ठा होगी। यहां से आपश्री का विहार मोटागांव, बांसवाड़ा (राज.) के लिये होगा जहां श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर की प्रतिष्ठा दिनांक 21 अप्रेल को होगी। श्री सिद्धक्षेत्र शत्रुंजय महातीर्थ पालीताना में आपश्री का आगामी चार्तुमास होने जा रहा है जहां चार्तुमासिक प्रवेश 19 जुलाई को होगा। **चार्तुमास के लाभार्थी श्रीमती सम्पत्तबाई बापूलालजी चौधरी परिवार जीरण (नीमचवाले) है। चार्तुमास साबरमती धर्मशाला में होगा।**

✻ विश्वास रखिए भगवान की ओर से हमारे लिए जो फैसला किया गया है वह सर्वोत्तम ही है...!!

गज मंदिर में ध्वजारोहण महोत्सव

उज्जैन- श्री ऋषभदेव नगर में श्री केशरियानाथ प्रभु की छत्र छाया में गज मंदिर तथा जिनदत्तसूरी दादावाड़ी में 13 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण का दो दिवसीय महोत्सव मनाया गया। दिनांक 19 एवं 20 फरवरी को आयोजित समारोह में दिनांक 19 फरवरी को परमात्मा के 18 अभिषेक होने के साथ भव्य वरघोड़ा आयोजित किया गया। दिनांक 20 फरवरी को सत्तर भेदी पूजन पढ़ाने के साथ विजय मुर्हूत में ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ।

उज्जैन में पंचान्हिका महोत्सव

उज्जैन- आचार्य देव अजात शत्रु श्री नंदीवर्धनसागरसूरीजी महाराजा, सकल संघ हित आचार्यदेव श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा एवं साध्वी श्री सूर्यकांता श्रीजी म.सा., साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. के गुण स्तवना के लिये पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्यपाद आचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी महाराज, पूज्यपाद आचार्य श्री अंचल मुक्तिसागर सूरीजी महाराज, साध्वीवर्या श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चारुधर्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में 21 से 27 फरवरी तक आयोजित गुरु गौरव उत्सव में विविध पूजन, सामुहिक स्नात्र पूजन, पंच कल्याणक पूजन, 18 अभिषेक, लघुशांति स्नात्र महापूजन, परमात्मा की रथयात्रा तथा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

मोक्षदायिनी शाश्वत नवपद ओली गणिवर्य आनंदचंद्रसागरजी की श्री नागेश्वर तीर्थ में निश्रा होगी

✻ 14 से 24 अप्रेल तक महोत्सव मनेगा।

नागेश्वर- अनेक साधु-साध्वी की दीक्षा स्थलीय बड़नगर में एक बार फिर से दीक्षा की शहनाई बजी। मेहता परिवार की मुमुक्षु बहन कुमारी सलोनी का भगवती प्रवज्या हुई यहां उज्जैन संघ की विनंती पर पूज्य साध्वीवर्या श्री अमितगुण श्रीजी म.सा. का चार्तुमास उज्जैन श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की घोषणा हुई। पूज्य गणिवर्य श्री का 3-4 मार्च को उज्जैन विहार का कार्यक्रम है। आपश्री की निश्रा में विश्व विख्यात श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ महातीर्थ में चैत्र मास की शाश्वती नवपद ओली की आराधना का आयोजन दिनांक 14 से 24 अप्रेल तक महोत्सव पूर्वक होगा। ओलीजी के आयोजक बदासिया परिवार सूरत है। ओलीजी के मध्य में वर्तमान तीर्थाधिपति प्रभुवीर के जन्म कल्याणक महोत्सव भव्य रथयात्रा का आयोजन भी होगा।

पंन्यास पदवी प्रदान की जायेगी

जलगांव-पद्मभूषण, राज प्रति बोधक पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसुंदर सूरीश्वरजी महाराजा के शिष्यरत्न सरल स्वभावी पू.आ. श्रीमद् विजय पद्मसुन्दर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न पूज्य गणिवर्य श्री वात्सल्यसुंदर विजयजी म.सा. तथा पू. गणिवर्य श्री परार्थसुन्दर विजयजी म.सा. का पंन्यास पदवी प्रदान करने का भव्य आयोजन चैत्र सूद-7 सोमवार 15 अप्रेल को जलगांव में होने जा रहा है। पदवी प्रदान महोत्सव की तैयारी चल रही है।

1000 किलो की धातु प्रतिमा का प्रवेश हुआ

चैन्नई- श्री चन्द्रप्रभ स्वामी जिनालय में श्री आदिनाथ दादा की पंच धातु की 1000 किलो वजन की प्रतिमा का प्रवेश 25 फरवरी को हुआ। पूज्य आचार्यदेव श्री अजितशेखरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में प्रभुजी का प्रवेश हुआ।

झालरापाटन में गृहमंदिर प्रतिष्ठा हुई

झालरापाटन- वर्धमान तपोनिष्ठ पूज्य साध्वीवर्या श्री कल्पदुमा श्रीजी म.सा. के वरद हस्ते यहां बाफना हवेली में निर्मित गृह मंदिर में प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन किया गया। दिनांक 6 फरवरी को साध्वीवर्याश्री का मंगल प्रवेश हुआ। दिनांक 9 फरवरी को विविध पूजन तथा परमात्मा के 18 अभिषेक हुए। दिनांक 10 फरवरी को श्री ऋषि मंडल महापूजन पढ़ाई गई। दिनांक 11 फरवरी को प्रातः वरघोड़े का आयोजन किया गया एवं शुभ लग्नांश वेला में परमात्मा की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। फले चुंदड़ी का आयोजन किया गया।

चर्तुमुख जिनालय का ध्वजारोहण

अंतरिक्ष तीर्थ- यहां स्थित चर्तुमुखा जिनालय की वर्षिक ध्वजारोहण का आयोजन दिनांक 24 फरवरी को किया गया। संघ स्वामी वात्सल्य हुआ।

हरिद्वार में ध्वजा रोहण

हरिद्वार- श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ महातीर्थ हरिद्वार में दादा श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जिनप्रसाद पर दिनांक 15 फरवरी को ध्वजारोहण का आयोजन किया गया। मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली तथा पारसमलजी वैध चैन्नई के द्वारा लाभ लिया गया। इस अवसर पर सत्तरभेदी पूजन तथा स्वामी वात्सल्य भी हुआ।

नितेशभाई तांतेड़ दीक्षित हुए

मुंबई- यहां के गोवालिया टैंक ताड़देव के तेजपाल हॉल में श्री नितेश भाई गुरुजी चम्पालाल संघवी तांतेड़ का भव्य प्रवज्या महोत्सव आयोजित किया गया। पूज्य पंन्यास प्रवर डॉ. अरुण विजयजी महाराज आदि साधु-साध्वीवृंद की निश्रा में आयोजित त्रिदिवसीय प्रवज्या महोत्सव 15 से 17 फरवरी तक आयोजित किया गया था। शक्रस्तव का आयोजन भी हुआ। 16 फरवरी को दीक्षार्थी का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा निकाला। दीक्षा क्रिया विधि दिनांक 17 फरवरी को शुभ लग्नांश बेला में पूज्य पंन्यास प्रवरश्री की निश्रा में आयोजित की गई।

श्री अंतरिक्ष तीर्थ में नवपद ओलीजी

अंतरिक्ष तीर्थ- अंतरिक्ष तीर्थ में शाश्वत नवपद ओली की आराधना का आयोजन होने जा रहा है। दिनांक 15 से 23 अप्रेल तक होने वाली आयंबिल तपाराधना का लाभ शाह परिवार ने लिया है। श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ महाराज संस्थान शिरपुर तथा गिरनार भक्ति युवा समिति बड़ोदरा आयोजक है।

एक इतिहास सर्जक महापुरुष के महाप्रयाण से जैन जगत की दौलत लूट गई

❋ सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति देवलोक के वासी बने।

❋ जैन जगत स्तब्ध रह गया : बहुत ही सहजता से देह त्यागी।

पूना- सब कुछ अच्छा चल रहा था। सोलापुर में 16 फरवरी को प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा प्रदान कर त्रिदिवसीय महोत्सव में निश्रा प्रदान करने के लिये संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा ने सूयश गार्डन में 18 फरवरी को प्रातःकाल प्रवेश किया था। सुबह प्रवेश करते है, श्रीसंघ का 7.30 बजे लगभग मांगलिक प्रदान की, सभी विसर्जित हुए पूज्यपादश्री के मुनि भगवंतों ने उपाश्रय में व्यवस्थित रुप से विराजमान करवाया और धर्म क्रिया में निमग्न बने वर्तमान नूतन गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा भी साथ ही थे। पूज्यपाद आचार्य देवेश बड़ी तनमंयता से सागर की दौलत का ध्यान रख रहे थे। प्रातः 10 बजे पूज्यश्री नवकारसी करवाई और लगभग 10.31 बजे पूज्यश्री में कुछ विचलन दिखाई दिया। सभी गुरु भगवंत आसपास एकत्र हो गये थे, कुछ ही समय में सहजता से आपश्री ने देह त्याग कर कुछ ही समय में सहजता से आपश्री ने देहत्याग कर देवलोक का वासी बनने के लिये महाप्रयसा कर दिया। कोई रोग नहीं, किसी को कोई तकलीफ नहीं और पूज्यश्री छोड़कर चल दिया, तत्काल ही पूना श्रीसंघ वरिष्ठों को अवगत कराया गया और कुछ ही समय में यह समाचार सम्पूर्ण विश्व और देशभर के जैन जगत में प्रचारित हो गया कि संघ स्थिवर 103 वर्षीय 85 वर्ष के संयमी ने देह त्याग दी है। हजारों की संख्या में पूना के उपकारी गुरु भगवंत के दर्शन करने के लिये आने लगे। रात देर तक लाईन लगाकर धर्मिष्ठों ने दर्शन किया। वरिष्ठ श्रावकों और गुरु भगवंतों ने विचार विमर्श कर वर्धमान जैन आगम मंदिर जिसके सर्जनकर्त्ता पूज्यश्री के सह अग्नि संस्कार करने का निश्चय किया गया। रात्रि भक्ति में सुयश गार्डन में अंग्नि संस्कार को छोड़कर अन्य सभी चढ़ावे बोले गये। सागर समुदाय की श्रावक समिति श्री निरंजनभाई चौकसी श्री शैलेषभाई जवेरी आदि का आगमन होते ही विचार विमर्श कर गुरु भगवंतों से संपर्क कर यह निर्णय लिया गया कि सागर समुदाय के आगामी गच्छाधिपति पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य दीर्घ संयमी वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा को सागर गच्छाधिपति पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है और पूज्यपाद श्री दौलतसागर सूरीजी का अंग्नि संस्कार कात्रज में 19 फरवरी को प्रातःकाल शुभ लग्नांश बेला में किया जायेगा पर समाचार जैन जगत के सभी श्री संघों में भेज दिया गया।

प्रातःकाल सुयश गार्डन से हजारों धर्मिष्ठों के साथ जय जय नंदा जय जय भदा के नारों से पूना का आकाश गुंजायमान करते हुए पालकी निकली। जो प्रसिद्ध जैन तीर्थ कात्रज पहुंची।पालकी यात्रा में हजारों की संख्या में गुरु भक्तों की उपस्थिति रही। लगभग 5 किलोमीटर का मार्ग गुलाल से भर गया। जय-जय नंदा जय-जय भदा, दौलतसागरजी अमर रहे के नारे से आकाश गुंज उठा था। कात्रज तीर्थ पहुंचने के पूर्व ही हजारों की संख्या में भक्त पहुंच गये थे। यहां पर जैन शास्त्र विधान कर पूज्यश्री की देह गुरु भगवंतों ने श्रावकों को सौंप दी उसके बाद अग्नि संस्कार की क्रिया आरंभ हुई। लगभग 1 क्विंटल चंदन की लकड़ी के गुटके का उपयोग अग्नि संस्कार में किया गया। देववंदन की क्रिया की गई।

परासली तीर्थ में जिन बिम्बों का प्रवेश

परासली-श्री मिनी शत्रुंजयावतार परासली तीर्थ में श्री आदिनाथ प्रभु आदि जिन बिम्बों का नूतन जिनालय में प्रवेश पर शुभ निश्रा में 15 मार्च 2024, पावनकारी निश्रा आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरी जी म. सा., मालव मार्तण्ड पू.आ.श्री मुक्ति सागर सूरीश्वरजी म.सा. युवा प्रबोधक गणिवर्य श्री आनंदचन्द्रसागरजी म. सा.आदि ठाणा तथा श्रमणीवृंद प.पू.शशीप्रभा श्रीजी म.सा.की शिष्या प.पू.कल्पद्रुमा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा, प.पू.दमिता श्रीजी म.सा. की शिष्या प.पू.मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा, प.पू.हेमप्रभा श्रीजी म.सा की शिष्या प.पू.हितेषाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की रहेगी।

सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति पद पर वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा को प्रतिष्ठित किया गया

✻ श्री आदिनाथ सोसायटी में हजारों धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। ✻ वाप के गुरुभक्तों ने लाखों की बोली ली। ✻ नामकरण गुरु पूजन-कामली की बोली लगी। ✻ देशभर के गुरु भक्त का आगमन हुआ।

पूना- संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्य पाद गच्छाधिपति श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी के 18 फरवरी को देहत्याग देने के बाद यह निश्चित हो गया था कि सुविशाल सागर समुदाय के आगामी गच्छाधिपति वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा होंगे। पूज्यश्री को गणनायक पद पर विराजमान करने के लिये 22 फरवरी को श्री आदिनाथ सोसायटी में पदवी प्रदान महोत्सव आयोजित किया गया। अपेक्षा से कई गुना अधिक धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। इस प्रसंग पर पूज्य आचार्यश्री महाबोधि सूरीश्वरजी म.सा. का आगमन हुआ। कार्यक्रम को पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विरागसागरजी महाराज ने व्यवस्थित स्वरुप प्रदान कर समा बांध दिया वहीं अपने दादा गुरुदेव के प्रति वर्धमान तपोनिष्ठ मूनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी ने धर्मसभा को संबोधित कर गुरु की गरिमा का वर्णन किया। जैनाचार्य महाबोधिसूरीजी ने भी प्रसंगों के उद्बोधन में गच्छाधिपति के प्रति अहोभाव प्रदर्शित किया। पूज्यपाद गच्छाधिपतिश्री ने श्री संघ और परमात्मा गच्छनायक के पद का दायित्व संभालने की शक्ति मांगी और कहाकि सबके साथ सामंजस्यता पूर्ण व्यवहार करते हुए अच्छी तरह से पद का निर्वाह करुंगा तथा सबकी समस्याओं के समाधान के साथ परमात्मा के शासन की अच्छी प्रभावना हो तथा सागर समुदाय को आगे ले जाने का कार्य मेरे द्वारा हो यह भावना रखता हूं। गुरु पूजन कामली वोराने तथा नामकरण की बोलियां वाववालों ने ली। उज्जैन से सागर श्रावक समिति के सदस्य और आगमोद्धारक सम्पादक डॉ. सुभाष जैन के साथ श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी के संरखक श्री जयंतिलाल तेलवाला की उपस्थिति रही।

✻ जो महापुरुष लगातार 36-36 वर्षों से श्री भगवतीजी आगम के चातुमार्सिक प्रवचन दे रहे है।✻ जो महापुरुष गुजरात के वाव के प्रथम आचार्य भगवंत है।✻ जो महापुरुष ज्योतिष के प्रकांड विद्वान है।✻ जो महापुरुष वचनसिद्ध है और जिनका संयम शुद्ध है।✻ जो महापुरुष 64 वर्ष से अखंड नवपदजी ओली की आराधना कर रहे है।✻ जो महापुरुष 9-9 वर्षीतप के आराधक है।✻ जो महापुरुष न्याय-व्याकरण-काव्य छंदशास्त्र-आगमों के विशिष्टजाता है। ✻ जो महापुरुष संस्कृत भाषा के मास्टर है। ✻ जो महापुरुष भारतभर के अनेक संघों में वर्षीतप की प्रेरक बन हजारों तपस्विओं के उपकारी है। ✻ जो महापुरुष भोपावर तीर्थ अभ्युदयपुरम् कल्याण मंदिर तीर्थ जैसे तीर्थो के मुख्य प्रतिष्ठाचार्य है।✻ जो महापुरुष सरलता के भंउार है। ✻ ऐसे महासंयमी-महापवित्र महापुरुष अब सागर समुदाय के गच्छाधिपति बने है।

गोवा में ध्वजारोहण हुआ

मांड़गांव- यहां स्थित श्री सुमतिनाथ जिन मंदिर की 24 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण के आयोजन पर जिनालय में 18 अभिषेक हुए। दिनांक 23 फरवरी को आयोजित कार्यक्रम श्री सिद्धचक्र महापूजन, सत्तर भेदी पूजन हुई, ध्वजा का वरघोड़ा आयोजित हुआ। अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक भाई मनोजकुमार बाबूमलजी हरण का मार्गदर्शन प्रेरणा रही।

99 यात्रा का आयोजन होगा

पालीताना- आरोहण के नाम से नव्वांणु यात्रा का आयोजन श्री सिद्धगिरी महातीर्थ में होने जा रहा है। दिनांक 15 अप्रेल से यात्रा आचार्य श्री विजय संयम बोधि सूरीजी महाराजा आदि ठाणा की निश्रा में होगा।

बंधुबेलड़ी आचार्यश्री अंजनशलाका दीक्षा एवं वर्षगांठ के आयोजन से प्रभुवीर के शासन का गौरव बढ़ रहे है

✻ भूवैज्ञानिक मुनिश्री रामचन्द्रसागरजी बने।

✻ संयम पालरेचा 12 जून को दीक्षित हो रतलाम का गौरव बढ़ायेंगे।

अयोध्यापुरम्-सागर समुदाय का गौरव और अभिमान की रक्षा करनेवाले और परमात्मा प्रभुवीर के शासन को आगे बढ़ानेवाले सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्य श्री जिनचंद्रसागर सूरीजी, श्री हेमचन्द्रसागर सूरीजी महाराज के साथ जैनाचार्य श्रीप्रसन्न चन्द्रसागरसूरीजी जैनाचार्य श्रीविराग चन्द्रसागर सूरीजी आदि की अमृत निश्रा में आनेवाले आयोजन में तथा उनके गुरुकुल के शिष्य-प्रशिष्य इसमें महायोगदान दे रहे है। पूज्य बंधुबेलड़ी श्री की निश्रा में सागर श्रमण समुदाय की गौरव गाथा बढ़ानेवाला और परमात्मा श्री आदिनाथ दादा का जीवंत महातीर्थ अयोध्यापुरम् में जिनशासन का एक नया इतिहास का सर्जन हो गया। पूज्यश्री की निश्रा में यहां अंजन शलाका के साथ ध्वजारोहण का आयोजन तो हुआ ही साथ ही मात्र 30 दिनों में गुरु भगवंतों के संपर्क में आकर भूवैज्ञानिक भाई राहुल के जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल गई और उन्होंने परमात्मा प्रभुवीर का श्रमण जीवन अंगी कराकर दिनांक 24 फरवरी को संयम जीवन स्वीकार कर लिया और मुनिश्री रामचंद्रसागरजी महाराज बन गये। अभी दादा की ध्वजा श्री अयोध्यापुरम् तीर्थ 2 मार्च को सम्पन्न होने जा रहा है। पूज्यश्री की निश्रा में मालवा का गौरव बढ़ानेवाला और रतलाम की जिन शासन प्रभावना का गौरव बढ़ानेवाला प्रसंग घटित होने जा रहा है। दिनांक 12 जून को रतलाम की संयमी आत्मा मुमुक्षु संयम कुमार पालरेचा प्रभुवीर की श्रमण परम्परा को स्वीकार कर भगवती प्रवज्या ग्रहण करने जा रहे है। दिनांक 21 फरवरी को पूज्यश्री ने आपका संयम ग्रहण मुर्हूत अयोध्यापुरम् में 12 जून प्रदान किया है। इस प्रसंग पर 5 आचार्य भगवंतों के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की अमृत निश्रा रहेगी। भगवती प्रवज्या की तैयारियां आरंभ हो गई है।

मुर्हूत प्रदान

कच्छ- यहां के रापट गढ़वाली में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री योगतिलक सूरीश्वरजी महाराजा के द्वारा 33 मुमुक्षु को दीक्षा मुर्हूत प्रदान परमात्मा प्रभुवीर का पथगामी बनने का मार्ग दिखलाया। इसमें 10 वर्ष का बाल मुमुक्षु 57 वर्ष का प्रौढ़ पूरे परिवार को ताला लगाकर श्रमण धर्म स्वीकार करेंगे। इस प्रकार 13 श्रावक और 20 श्राविका दीक्षित होने के लिये संयम मुर्हूत को स्वीकार करेंगे। मुर्हूत 24 फरवरी को किया गया।

गिरनार में नव्वांणु यात्रा

गिरनार- पूज्य आचार्य भगवंत श्री हेमवल्लभसूरीजी महाराजा की अमृत निश्रा में नव्वांणु यात्रा का आयोजन दिनांक 6 जनवरी 2024 से आरंभ होने जा रहा है, लाभार्थी की माल दिनांक 18 फरवरी को होगी।

पूज्यपाद गच्छाधिपति के संयम जीवन की अनुमोदना हुई

मुंबई- सकल हित चिंतक पूज्य पाद आचार्य देवेश श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी के सुशिष्य प्रशिष्य पूज्य उपाध्याय श्री विनीतसागरजी महाराज ओजस्वी वक्ता मुनिश्री विनम्रसागरजी म.सा. आदि ठाणा साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में ओजस्वी प्रवचन कार मुनिराज श्री विनम्रसागरजी म.सा. के संयम जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होने के साथ पूज्यपाद आचार्य देवेश सागर गच्छाधिपति 103 वर्षीय 85 वर्ष संयम जीवनधारक रहे आचार्यदेवेश श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा के अनुमोदनार्थ अहोभाव अंतःस्पर्श उत्सव का आयोजन दिनांक 25 फरवरी को किया गया। यह आयोजन षणमुखानंद सभागृह में हुआ।

आचार्यश्री पूर्णचंद्रसूरी का 53 वां संयम वर्ष

वरतेज- आचार्यदेव श्री कलापूर्ण सूरीश्वरजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश श्री पूर्णचंद्र सूरीश्वरजी महाराज के संयम जीवन के 53 वर्ष पूर्ण होने पर त्रिदिवसीय संयम गौरव महोत्सव का त्रिदिवसीय आयोजन किया गया। दिनांक 21 से 23 फरवरी तक आयोजित संयमोत्सव के अंतर्गत श्री संभवनाथ जिनालय का 18 अभिषेक साधारण की सूची का अनावरण किया गया। दिनांक 23 फरवरी को पूज्यश्री के जीवन पर संयम संवेदना तथा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- फाल्गुन सुदी-8	रविवार	17-3-2024	चौमासी अट्ठम आरम्भ
2- फाल्गुन सुदी-13 प्रथम	शुक्रवार	22-3-2024	श्री सिद्धाचल की छः गांव की यात्रा
3- फाल्गुन सुदी-14	रविवार	24-3-2024	चौमासी चवदस
4- फाल्गुन सुदी-15	सोमवार	25-3-2024	भोमियाजी होलीत्सव शिखरजी
5- चैत्र वदी-3	गुरुवार	28-3-2024	गुरुदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का 81 वां जन्म दिवस
6- चैत्र वदी-6	रविवार	31-3-2024	मालवो देशोद्धारकश्री चन्द्रसागरसूरीजी महाराजा का कालधर्म दिवस

पंचक :- **आरम्भः-** फाल्गुन वदी-13, शुक्रवार, दिनांक 8-3-2024 समय 21.21 बजे आरंभ
समाप्तः- फाल्गुन सुदी-2, मंगलवार, दिनांक 12-3-2024 समय 20.31 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः-** फाल्गुन सुदी-10, मंगलवार, दिनांक 19-3-2024 समय 20.11 बजे से
समाप्तः- फाल्गुन सुदी-11, बुधवार, दिनांक 20-3-2024 समय 22.39 बजे तक

जाव न इंदियहाणी
जाव न जररक्खासी परिप्फुरइ।
जाव न रोगविआरा
जाव न मच्चू समुल्लिअइ ॥

जब तक इन्द्रियाँ क्षीण नहीं हो जाती.... जब तक जरा राक्षसी प्रगट नहीं हो जाती.... जब तक रोगों के विकार उत्पन्न नहीं हो जाते.... जब तक मौत आ नहीं जाती.... तब तक आत्मकल्याण कर लेना चाहिये।✲श्री वैराग्यशतक ग्रंथ-चिरंतनाचार्य

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

जैनत्व का गौरव

जिनधर्मविनिर्मुक्तोमां भुवं चक्रवर्त्यपि।
स्यां चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्माधिवासितः ॥

-जैनधर्म से भावित ऐसा दरिद्री या दास बनना भी मुझे पसंद होगा परन्तु जैनधर्म से रहित चक्रवर्ती बनना मुझे मान्य नहीं। - **योगशास्त्र ग्रंथ ✲ श्री हेमचन्द्राचार्यजी**

सादर आमंत्रण

✲ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✲ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✲ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✲ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

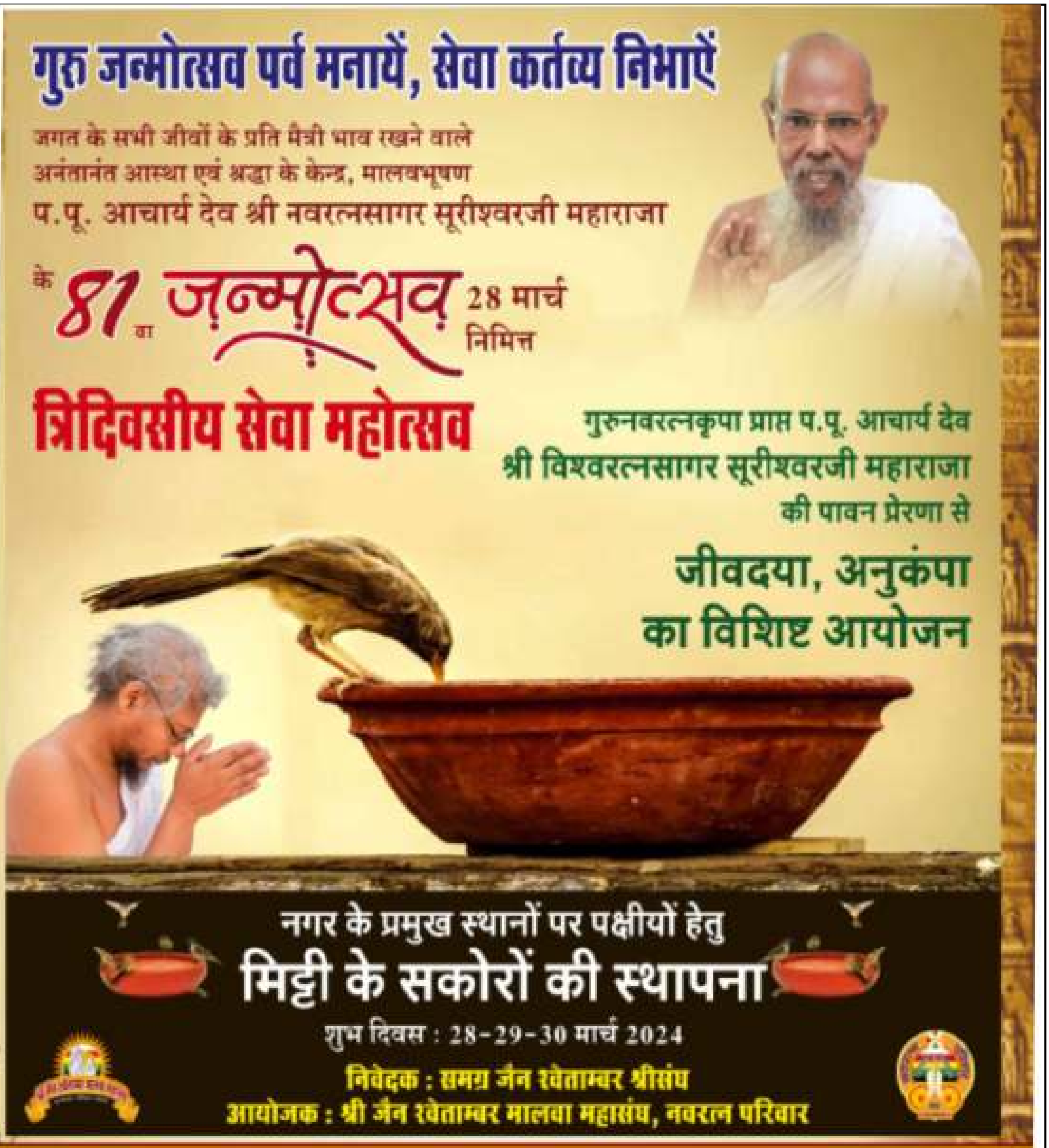

वर्ष 29 | फाल्गुन-चैत्र | मार्च-2024 | अंक 03 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एन.डी. 08/2024-2026

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-
डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, लक्षीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897